भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक–सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 10 **जनवरी** 2009 **अंक** 1

पुस्तक माहात्म्य

नित नवीन पुस्तक पढ़ें, पायें नूतन ज्ञान।
ज्ञानवान इंसान का, होय सदा कल्यान॥ 1॥
हर पुस्तक है ज्ञान की, ऐसी अद्‌भुत खान।
जिन खोजा तिन पाइयाँ, मन चाहा सब ज्ञान॥ 2॥
घर बैठे निर्धन बने, बिन धन के धनवान।
पुस्तक की महिमा बड़ी, करे सतत धनवान॥ 3॥
पुस्तक की पूजा करो, यह भी देव समान।
जितना बाँचो, पाओगे उतना ही वरदान॥ 4॥

—**गिरीश पंकज,** रायपुर

जब फिराक़ साहब की क्लास में देहाती घुस आया

उर्दू के मशहूर शायर तथा इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अंग्रेजी के प्राध्यापक प्रो० रघुपतिसहाय फिराक़ की क्लास में एक दिन कोई ग्रामीण पुरुष चला आया और सिर पर की गठरी सबसे पीछे की बैंच पर रख कर स्वयं भी वहीं बैठ गया। फिराक़ साहब पढ़ाते-पढ़ाते उसे देख कर चुप हो गये और खरामा-खरामा चलकर उसके पास आ गये। वह व्यक्ति सिटपिटा कर खड़ा हुआ ही था कि फिराक़ साहब ने उससे पूछा—''बीड़ी लाए हो?'' हड़बड़ा कर उसने जेब से बीड़ी का बंडल निकाला और फिराक़ की ओर बढ़ा दिया। फिराक़ ने उसमें से एक बीड़ी ली और उस व्यक्ति को हाथ के इशारे से तसल्ली देकर वापस लौट आये। बीड़ी सुलगा कर फिर पढ़ाने लगे।

हुआ यह था कि वह ग्रामीण अपने किसी सम्बन्धी छात्र को ढूँढता हुआ आया था। किसी शरारती छात्र ने दूर से फिराक़ की ओर इशारा कर उसे समझा दिया था कि वह बड़े बाबू हैं। उनके कमरे में जाकर पीछे बैठ जाओ। जब उनकी बात खत्म हो जाए तो उनसे लड़के का पता पूछ लेना। यहाँ ग़नीमत रही—वर्ना वे यदि बहक जाते तो गालियों का अम्बार लगा देते। सुनने वाला उनकी बुजुर्ग़ियत का नहीं तो उनके नंगई पर उतर आने का खयाल कर तरह दे जाता। किस्सा बीड़ी पर ही खत्म हो गया।

'*साहित्यकारों के हास्य-व्यंग्य*' पुस्तक से

तन्मे मनः ...

''मैं भारत में लोहे की मांसपेशियों और फौलाद की धमनियाँ देखना चाहता हूँ क्योंकि इनमें ही **वह मन** निवास करता है **जो शंपाओं एवं वज्रों से बना होता है**।'' देश के नौजवानों को सम्बोधित स्वामी विवेकानन्द का यह कथन एक समूची शताब्दी (20वीं सदी) में भारतीय नौजवानों की मानसिक-संरचना का कारक-सूत्र बन गया। स्वामीजी की इस आकांक्षा का आधार था जनसामान्य में शिक्षा का प्रसार। वे आधुनिक-शिक्षा के साथ मनुष्य के आत्मोन्नयन के प्रति आश्वस्त थे तभी इस उच्चतर मनोशक्ति की बात कर रहे थे और यह संयोग ही था कि उस युग के शिक्षित युवा वर्ग का एक बड़ा समूह हमारे राष्ट्रीय-सामाजिक जीवन के परिवर्तनकारी घटक के रूप में सक्रिय हो गया। एक ओर पुनर्जागरण या नवोन्मेष (रेनेसाँ) की लहर में भारतीय सामाजिक जीवन की जड़ता ध्वस्त होकर अपनी रूढ़ियों के साथ छिन्न-भिन्न हो चली थी तो दूसरी ओर औपनिवेशिक-शासन के बीच ही हमारी सांस्कृतिक-राष्ट्रीयता का निर्माण हो रहा था। इस राष्ट्रीय-मानसिकता ने समेकित होकर सामाजिक-सुधार के साथ-साथ राजनीतिक स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ी और आज़ादी हासिल की। इस क्रान्ति-युग की मुखर-अभिव्यक्ति है हमारी सभी भाषाओं का साहित्य। बंकिम, रवीन्द्र, नज़रूल, शरद्, अरविन्द, प्रसाद-प्रेमचंद-निराला-दिनकर, इकबाल, फैज़ जैसे साहित्यकार अपने पाठकों की मानसिक-रचना करने का अज्ञात दायित्व भी निभा रहे थे, जिसका प्रत्यक्ष परिणाम था हमारी लक्ष्यसिद्धि-हमारी सार्वभौम स्वतंत्रता।

आज़ादी पाने के बाद लक्ष्य और संकल्प बदलते रहे लेकिन शैक्षणिक और मानसिक-विकास का क्रम ज़ारी रहा। किन्तु आज समग्र शैक्षणिक, वैज्ञानिक और तकनीकी विकास के बावजूद संवेदन-हीनता बढ़ रही है। बाज़ारवाद की चपेट में आकर साहित्य और संस्कृति भी अपने उद्देश्य में असफल सिद्ध हो रहे हैं। इस चुनौती भरे विषम वातावरण में भी साहित्य की पुण्यसलिला रसधारा से यांत्रिक-हृदय का सिंचन करना होगा, उसे संवेदनशील बनाना होगा ताकि नवागत युवा पीढ़ी की मनोरचना उसी सत् शिव सुंदर से समरस हो और यह दायित्व वर्तमान साहित्य के सर्जनशील रचनाकारों को निभाना होगा। चूँकि आधुनिक शिक्षा-प्रणाली के शाखा-प्रधान अध्ययन की तरह साहित्य भी लोगों से कटकर सिर्फ साहित्य-जीवियों के लिए रह गया है अतः प्रयत्नपूर्वक इस स्थिति को बदलना होगा। आम लोगों से, खासतौर पर युवावर्ग से सीधे संवाद स्थापित कर उसकी रुचि को साहित्य की ओर अभिमुख करना होगा, तभी किसी भी दिशा में काम करने वाले युवक के मनोसंकल्प शुभंकर एवं कल्याणमय होंगे।

'तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।'

■ ■ ■

शेष पृष्ठ 2 पर

छापो-छपो संवाद

पहली पुस्तक लिखने के बाद लेखक प्रकाशक की दुकान पर पहुँचे, तो प्रकाशक बोले, ''क्या लेंगे गरम लेंगे या ठंडा?''

साहित्यकार को लगा कि मार्केट में उनकी वैल्यू है। वह प्रफुल्लता से बोले, ''चाय पीकर आया हूँ। मैं तो अपनी पहली पुस्तक के प्रकाशन के सम्बन्ध में आपके पास आया था।''

प्रकाशक बोले, ''क्या करें, किताबें बिकती तो है नहीं। कागज महँगा हो गया है। आपने लिखा क्या है?''

साहित्यकार बोले, ''मैंने एक कहानी संग्रह तैयार किया है।''

प्रकाशक बोले, ''सब जगह कमीशनबाजी है। हमें किताब 70-80 परसेंट तक में निकालनी पड़ती है। ऐसे में क्या तो हम लें और क्या आपको दें?''

''मैं कोई दूसरा काम तो करता नहीं। इसलिए बिना रॉयल्टी के मेरा खर्चा-पानी कैसे निकलेगा?''

''रॉयल्टी दे देंगे आपको। पहला एडिशन तीन सौ प्रतियों का छापता हूँ। किताब बिकेगी, तो और छाप लेंगे। एक राय दूँ आपको? आप रॉयल्टी के भरोसे न रहें कोई काम भी करें।''

साहित्यकार बोले, ''मैं फ्रीलांस काम में बिलीव करता हूँ। पर पहला एडिशन तो ग्यारह सौ का होता है, तीन सौ का चलन कब से हो गया?''

''पहले ग्यारह सौ का ही हुआ करता था। लेकिन किताबें बिकती नहीं, तो ग्यारह सौ छापकर क्या करें? मैं एक रास्ता और बताता हूँ आपको। आप प्रति पेज बीस रुपये लेकर प्रथम संस्करण की रॉयल्टी पूरी की पूरी ले जाओ। कितने पेज का संग्रह है आपका?''

''यही कोई एक सौ पचास पृष्ठ का। एकमुश्त में तो तीन हजार मिलेंगे। मैं तो ग्यारह सौ का संस्करण और दस परसेंट रॉयल्टी चाहता हूँ।''

प्रकाशक ने अपने हाथ जोड़ लिए, ''आप दूसरा प्रकाशक तलाश लें। मेरे यहाँ छपवाओगे, तो कॉपीराइट आपका ही रहेगा। आजकल दूसरे प्रकाशक एकमुश्त देकर पुस्तक का कॉपीराइट खरीद लेते हैं।''

तभी चाय आ गई। प्रकाशक ने साहित्यकार को बाअदब चाय पेश की और बोले, ''रॉयल्टी में वर्षों तक हिसाब चुकता नहीं होता। एक वर्ष बीस बिकी, तो दूसरे वर्ष में पंद्रह, इस तरह पहला एडिशन बिकने में पांच-सात वर्ष लग जाते हैं। एकमुश्त सौदा करोगे, तो अभी नगद भुगतान कर दूँगा।''

साहित्यकार की समझ में कुछ नहीं आ रहा था। प्रकाशक ने उनकी उलझन में खलल डालते हुए कहा, ''बीस किताबें आपकी फ्री और दे दूँगा। कुछ रिव्यू के लिए भिजवा दूँगा, अब तो खुश।''

साहित्यकार को जैसे सांप सूंघ गया था। पांडुलिपि देखकर वह बोले, ''प्रथम एडिशन छह सौ का निकाल दो और दस परसेंट दे दो, काम बन जाएगा।''

''आपकी मर्जी। लेकिन फिर मत कहना कि किताब का हिसाब आठ बरस में भी नहीं हुआ।'' प्रकाशक की बात सुनकर साहित्यकार आश्वस्त हो गए और कांट्रेक्ट पर साइन कर आए। दो साल बीत गए। प्रकाशक की ओर से रॉयल्टी स्टेटमेंट नहीं आया है। **—पूरना सरमा**

पृष्ठ 1 का शेष

सर्वेक्षण

इस बार अपने सर्वेक्षण में हमने पाया कि हमारी हिन्दी के सिर पर अभी भी हमारे ही अपने कानून की तलवार लटकी हुई है। इस बार भारतीय विधि आयोग ने राष्ट्रीय अखण्डता के नाम पर यह आघात किया है। **उसके अनुसार** सुप्रीम कोर्ट और हाईकोर्ट के फैसले हिन्दी में लिखे जाने की संसदीय-समिति की माँग स्वीकार कर लेने से देश की एकता और अखण्डता प्रभावित होगी साथ ही देश में राजनीतिक व कानूनी बदअमनी का माहौल भी बनेगा। अत: आयोग ने सुप्रीम कोर्ट एवं हाईकोर्ट के सेवानिवृत्त न्यायाधीशों की सम्मति से संसदीय-समिति की सिफारिश को खारिज करते हुए अंग्रेजी को बरकरार रखने की हिमायत की है। शिक्षा और प्रशासन में हिन्दी का प्रवेश उसके संघर्ष से ही हुआ है, अदालत में नागरी-हिन्दी के प्रयोग की मान्यता को भी सौ साल गुज़र चुके हैं। सतत संघर्ष द्वारा हिन्दी क्रमश: अपना प्राप्य हासिल करती रही है, इसी क्रम में आज वह अन्तर्राष्ट्रीय पहचान बना सकी है। अत: अपने ही देश में, अपने ही विधान द्वारा पुन: तिरस्कृत होकर उसमें नयी शक्ति का संचार होगा। विधि-आयोग से हमारा इतना ही निवेदन है कि अंग्रेजी के मोहपाश में राष्ट्रीय-अखण्डता के टूटने का भयातंक न पैदा करें बल्कि जनता को जनता की भाषा में न्याय दिलाने का दायित्व निभायें।

■ ■ ■

सितारों से आगे

अब से नौ वर्ष पूर्व (जनवरी 2000) में जिस शिवसंकल्प के साथ हमारे पूज्य पिताश्री पुण्यश्लोक पुरुषोत्तमदास मोदी ने 'भारतीय वाङ्मय' के कलेवर की रचना की और अपने अथक परिश्रम से 8 वर्षों तक उसे पुष्ट करते-करते अचानक अपनी इहलीला का संवरण कर गये। उस आघात ने एकबारगी तो हमें झकझोर दिया, मगर उनके गुरुतर-आरम्भ के दायित्वबोध ने हमें नयी प्रेरणा के साथ प्रदान की परम्परा को बनाये रखने की ऊर्जा। पिताश्री के संकल्प की उसी प्रेरणादायक-ऊर्जा के साथ 'वाङ्मय' अपने पहले दशक में प्रवेश कर रहा है। नववर्ष के साथ आरम्भ अपनी स्थापना के प्रथम-दशक में, 'वाङ्मय परिवार' की ओर से विद्वज्जनों, रचनाकारों, सुधी पाठकों को नये वर्ष की मंगलकामनाएँ.... !

तू शाहीं, परवाज़ है काम तेरा
उड़ने को आस्माँ और भी हैं,
सितारों से आगे जहाँ और भी हैं
अभी इश्क के इम्तिहाँ और भी हैं।

—परागकुमार मोदी

आश्चर्य होता है जब देश के भीतर ही उपेक्षित हिन्दी का परचम लहराने के उद्देश्य से भारतीय हिन्दी सेवी दूरे देशों में जाते हैं और वहाँ के लोगों के इस सवाल से रूबरू होते हैं कि आपके देश में हिन्दी की स्थिति कैसी है।

—दिवाकर भट्ट

किसी भी स्वतन्त्र राष्ट्र की पहचान उसकी भूमि, राष्ट्रीय झंडे तथा स्वभाषा के माध्यम से होती है। हमारा देश आजाद हो चुका है किन्तु उसकी जीभ कटी हुई है और केन्द्र सरकार में बैठे हुए तथाकथित रहनुमा लोकतंत्र के नाम पर बहुमत का निरादर कर रहे हैं।**—नृपेन्द्रनाथ गुप्त**

डॉ० कपिलदेव द्विवेदी : अभिनन्दन समारोह

ज्ञानपुर। पद्मश्री डॉ० कपिलदेव द्विवेदी के 91वें जन्म दिवस पर एक भव्य अभिनन्दन समारोह का आयोजन विगत 6 दिसम्बर 08 को किया गया।

समारोह में मुख्य अतिथि डॉ० शिवजी उपाध्याय, पूर्व प्रतिकुलपति, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय ने तिलक लगाकर तथा माल्यार्पण कर डॉ० कपिलदेव द्विवेदी का अभिनन्दन किया तथा इस अवसर पर प्रकाशित 'सारस्वत साधना के मनीषी' अभिनन्दन ग्रन्थ का लोकार्पण कर डॉ० कपिलदेव द्विवेदी को प्रदान किया। डॉ० शिवजी उपाध्याय ने मुख्य अतिथि के रूप में सम्बोधित करते हुए कहा कि विद्वान् और कवि का जीवन अनन्त होता है। जब तक उसकी रचना और कविता रहती है वह जीवन्त रहता है। डॉ० द्विवेदी ने संस्कृत भाषा और साहित्य को अपनी रचनाओं से समृद्ध किया है। आपने 90 वर्ष की आयु में भी वेदों पर ग्रन्थ लिखकर समाज को धन्य किया है। डॉ० उपाध्याय ने "जयन्ति ते सुकृतिनः रससिद्धाः सुधीश्वराः नास्ति येषां यशः काये जरामरणजं भयम्" का उल्लेख करते हुए कहा कि डॉ० द्विवेदी का जीवन सारस्वत-रूप में प्रतिफलित हुआ है। संस्कृत भाषा से ही संस्कार मिलते हैं इसका उदाहरण या तो आचार्य बलदेव उपाध्याय थे या डॉ० कपिलदेव द्विवेदी हैं।

इस अवसर पर विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी के अनुराग मोदी ने माला, तिलक, शाल और बुके से डॉ० कपिलदेव द्विवेदी का अभिनन्दन करते हुए कहा कि विश्वविद्यालय प्रकाशन का प्रथम प्रकाशन (1951-52) रचनानुवाद कौमदी है। इस पुस्तक से लाखों व्यक्तियों ने संस्कृत सीखी है। डॉ० कपिलदेव द्विवेदी का सर्वप्रथम परिचय मेरे पिता स्वर्गीय पुरुषोत्तमदास मोदी से सेन्ट एण्ड्रूज कॉलेज, गोरखपुर में हुआ। 1951-52 में डॉ० कपिलदेव द्विवेदीजी की संस्कृत व्याकरण की महत्त्वपूर्ण पुस्तक रचनानुवाद कौमुदी पिताजी ने प्रकाशित की। संस्कृत के अनेक विद्वानों ने पुस्तक का स्वागत करते हुए अनेक सुझाव दिए, जिसके आधार पर द्विवेदीजी ने अनेक महत्त्वपूर्ण संशोधन किये। तदनुसार रचनानुवाद कौमुदी के तीन संस्करण प्रकाशित किये गये—प्रारम्भिक रचनानुवाद कौमुदी—कक्षा हाईस्कूल के लिए, रचनानुवाद कौमुदी—इण्टर के लिए, प्रौढ़ रचनानुवाद कौमुदी—बी०ए०, एम०ए० स्तर के लिए। ये पुस्तकें आगे चलकर बहुत लोकप्रिय हुईं।

विद्यार्थियों को संस्कृत का अभ्यास कराने के लिए संस्कृत शिक्षा भाग 1, 2, 3 के रूप में संस्कृत की अभ्यास पुस्तिका प्रकाशित की गयी। इसके पश्चात् संस्कृत के सौ निबन्धों की (अब 110 निबन्ध) एक पुस्तक संस्कृत निबन्धशतकम् प्रकाशित हुई। डॉ० कपिलदेव द्विवेदी ने भाषा विज्ञान पर भाषा विज्ञान एवं भाषाशास्त्र नामक अद्वितीय पुस्तक की रचना की है जो छात्रों में अत्यन्त लोकप्रिय है। वैदिक साहित्य एवं संस्कृति पर उनके द्वारा रचित ग्रन्थ पाठ्य पुस्तक के रूप में उपलब्ध है।

डॉ० द्विवेदी का स्नातकोत्तर के छात्रों के लिए आदर्श ग्रन्थ 'अर्थ विज्ञान और व्याकरण दर्शन' का पहला संस्करण हिन्दुस्तानी एकेडमी से प्रकाशित हुआ था। उसके पश्चात् इसका द्वितीय, तृतीय संस्करण हमारे संस्थान से प्रकाशित हुआ। डॉ० द्विवेदी की पुस्तकें छात्र, प्राध्यापक और विद्वानों द्वारा अत्यन्त आदर के साथ देखी जाती हैं। डॉ० द्विवेदी की पुस्तकों को विदेशों में भी अत्यन्त सम्मान प्राप्त है। इस अवसर पर डॉ० कपिलदेव द्विवेदी ने कहा कि मैंने संस्कृत भाषा की सेवा को अपना धर्म माना। आपने कहा कि मनुष्य को ईमानदारी, निष्ठा और कठोर परिश्रम को अपनाना चाहिए। वही व्यक्ति सफलता प्राप्त करता है जो निरन्तर परिश्रम करता है। संस्कृत भाषा भारत की प्राण है, यह जीवनदायिनी और सद्भाव प्रेम की उद्भावना जागृत करने वाली भाषा है। इस अवसर पर उपस्थित विद्वानों ने डॉ० द्विवेदी को पद्मभूषण सम्मान से अलंकृत करने की माँग भारत सरकार से की है।

आयोजक डॉ० भारतेन्दु द्विवेदी ने आभार व्यक्त करते हुए मुख्य अतिथि, अध्यक्ष एवं विशिष्ट अतिथि का अंगवस्त्रम् शाल से स्वागत करते हुए पुस्तकें भेंट कीं।

पद्मश्री डॉ० कपिलदेव द्विवेदी

निदेशक, विश्वभारती अनुसंधान परिषद्
ज्ञानपुर (भदोही)

जन्म-स्थान : गहमर (गाजीपुर) उ०प्र०

जन्मतिथि : 6 दिसम्बर 1918 ई०

पिता : श्री बलरामदास जी

माता : श्रीमती वसुमती देवी

शिक्षा : गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर (हरिद्वार), लाहौर विश्वविद्यालय एवं इलाहाबाद विश्वविद्यालय।

उपाधियाँ : एम०ए० (संस्कृत, हिन्दी), डी०फिल्० (इलाहाबाद), व्याकरणाचार्य (वाराणसी), विद्याभास्कर (हरिद्वार)। जर्मन, फ्रेंच, रूसी, चीनी भाषाओं में विशेष योग्यता।

शैक्षणिक सेवाएँ : 1. प्रोफेसर—संस्कृत, सेंट एंड्रयूज़ कॉलेज, गोरखपुर। 2. विभागाध्यक्ष, संस्कृत, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय नैनीताल एवं ज्ञानपुर (भदोही)। 3. उपाचार्य एवं प्राचार्य, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, ज्ञानपुर (भदोही)। 4. प्राचार्य, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गोपेश्वर (चमोली)। 5. कुलपति, गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर (हरिद्वार)।

विदेश यात्रा : अमेरिका, कनाडा, इंग्लैण्ड, जर्मनी, हॉलैण्ड, इटली, स्विटज़रलैण्ड, फ्रांस, सूरीनाम, गुयाना, मॉरीशस, केनिया, तंजानिया, सिंगापुर की 1976, 1989, 1990, 1991 एवं 1993 में यात्रा की।

पुरस्कार एवं सम्मान : भारत सरकार द्वारा 1991 में पद्मश्री सम्मान, भारतीय विद्याभवन बंगलौर द्वारा 'गुरु गंगेश्वरानन्द वेदरत्न पुरस्कार' 2005, उ०प्र० संस्कृत अकादमी 'विशिष्ट पुरस्कार' 1992, उ०प्र० हिन्दी एवं संस्कृत अकादमी द्वारा 10 पुस्तकें पुरस्कृत, दिल्ली संस्कृत अकादमी द्वारा 'पण्डितराज जगन्नाथ संस्कृत पद्य रचना पुरस्कार', उ०प्र० हिन्दी संस्थान द्वारा 'बीरबल साहनी पुरस्कार' 1993, 'के०एन० भाल पुरस्कार' 2000, 'हजारी प्रसाद अनुशंसा पुरस्कार' 1988, 'वेद वेदाङ्ग पुरस्कार' 2000, 'आर्य विभूषण पुरस्कार' 2008, 'गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार' 1999, देश तथा विदेश के विश्वविद्यालयों एवं संस्थाओं द्वारा 25 से अधिक सम्मान एवं पुरस्कार।

प्रकाशन : वेदामृतम्-ग्रन्थमाला (40 भाग में), वैदिक वाङ्मय, संस्कृत साहित्य, संस्कृत-व्याकरण, अनुवाद, निबन्ध, भाषाविज्ञान, संस्कृत काव्याग्रन्थ आदि पर 70 से अधिक ग्रन्थ प्रकाशित।

बाज़ारवाद और हिन्दी

— डॉ० गरिमा श्रीवास्तव, हैदराबाद

मानव इतिहास साक्षी है कि मानव विकास को गति देने में जिन तीन आविष्कारों ने सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है वे हैं—भाषा, मुद्रण और पुस्तक। ज्ञान के जनतांत्रिकीकरण का काम मुद्रणकला ने किया और वह सर्वजन सुलभ हो पाया। इसी ज्ञान को आज बाज़ार ने चुनौती दी है। यह चुनौती मध्ययुगीन मानसिकता से नितान्त अलग है। सामंती और वर्णाश्रम आधारित समाज व्यवस्था ने समाज के एक बड़े तबके को ज्ञान से वंचित रखने का प्रयास किया था, जिसके फलस्वरूप पिछली सदी के प्रारम्भ में भारतीय समाज में निरक्षरता थी, जबकि अधिकांश यूरोप, विशेषकर पश्चिमी यूरोप साक्षर ही नहीं शिक्षित भी हो चुका था। आज भी भारत की लगभग पचास प्रतिशत जनता निरक्षर है।

भाषा, लिपि और ज्ञान की यात्रा को जनता तक पहुँचाने के लिए सबसे ज्यादा प्रभावकारी माध्यम है, जन भाषा। इसी जन भाषा के माध्यम से जनजागृति की अपेक्षा की जाती है। बर्तोल्त ब्रेख़्त ने जब कहा था—''ओ भूखे मनुष्य किताब पढ़।'' तो उनका इशारा जनता में पैठे अज्ञान के अंधकार की तरफ था, जो भूखी, बुभुक्षित जनता की दुर्दशा का मूल कारण है। पुस्तक, जो मध्ययुग में मात्र अभिजन तक ही सीमित थी, वह आम जनता तक नहीं पहुँची। पूँजीवादी व्यवस्था ने सर्वदा अपना हित देखा और सर्वहारा और स्त्रियों को पुस्तक से वंचित रखा। यह स्थिति द्वितीय विश्वयुद्ध तक यथावत रही और उसके बाद कल्याणकारी राज्य की अवधारणा ने इस स्थिति को बदलने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। इंग्लैण्ड के मजदूर नेता हैरी पॉलित ने सन् 1940 के आसपास अपनी आत्मकथा में लिखा था कि अपनी युवावस्था में वे जब कभी किसी बड़े पुस्तकालय के पास से गुजरते थे तो हसरत से उसे देख सोचते थे कि क्या कभी इस पुस्तकालय के भीतर जाने का, ज्ञान के अपरिमित भण्डार को देखने का अवसर उन्हें मिलेगा? एक पूरी पीढ़ी ज्ञान से इसलिए वंचित रह गयी क्योंकि वर्गभेद ने ज्ञान-भण्डार और पीड़ित शोषित वर्ग के बीच दूरी बनाए रखी। जिसे सदियों से ज्ञान से वंचित रखा गया हो वही जान सकता है कि ज्ञान के प्रकाश का अर्थ क्या है। रूस में साम्यवादी क्रांति से हुए व्यापक परिवर्तन के पीछे ज्ञान पाने की इच्छा थी। रवींद्रनाथ टैगोर ने कहा था कि अज्ञान के अंधकार से मुक्ति केवल स्वराज्य द्वारा सम्भव है। गांधीजी ने ज्ञान को 'स्वराज्य' के लिए ज़रूरी बताया था। आज स्वराज्य के साठ साल बाद भारतीय जन की स्थिति क्या है, नव साक्षरों और नव शिक्षितों की पहली पीढ़ी जिन-जिन समुदायों से उभर कर आयी है, उन नवशिक्षितों का सामाजिक चरित्र और उनकी सामाजिक भूमिका क्या है। आज़ादी के बाद की दूसरी पीढ़ी अधिक से अधिक धन कमाने के अवसर विदेश में तलाश और पा रही है। भारतीय शिक्षा का ढाँचा मात्र एक पुल का काम करता है। ज्ञान का उपयोग अपने देश के हित में करने के बजाय बहुराष्ट्रीय निगमों के हित में करना इस पीढ़ी की उपभोक्तावादी सोच का परिणाम है।

ज़मीनों की बिक्री और शिक्षा के लिए सरकारी अनुदान से पिछली सदी में हाशिए पर रह रहे लोग केन्द्र में आने का अवसर पा गए हैं। शिक्षा प्राप्त करने का जो समान अवसर इन्हें मिला है, उससे अधिकांश के लिए यह रोज़गार का माध्यम बनकर ही उभरी है। केन्द्रीय विश्वविद्यालय में अन्य पाठ्यक्रमों के अलावा हिन्दी का एकीकृत पाठ्यक्रम (Integrated Course) भी है। फिर भी हिन्दी पढ़ने में जिन छात्रों की वास्तविक रुचि है, उनका प्रतिशत बहुत कम है। शोधवृत्ति की पेशकश ने उत्तर भारत के बहुत से छात्रों को इस ओर आकर्षित किया है। हिन्दी सीखना यहाँ पर शौक नहीं मज़बूरी है।

हिन्दी भाषी पाठकों की दशा यह है कि पुस्तकें आम जनता की जेब पर भारी हैं। वे इस कदर महंगी हैं कि लोग उन्हें ख़रीदने के स्थान पर 'मल्टीप्लेक्स' में सिनेमा देखना ज़्यादा पसन्द करते हैं। 750 रु० देकर 'गोल्ड टिकट' ख़रीदना उन्हें ज़्यादा लाभप्रद लगता है। हिन्दी समाज अपने पढ़े-लिखे भद्रजनों के सम्मान से कतराता है। दक्षिण में भी हिन्दी की दशा दयनीय है। अधिकांश डिग्री कॉलेजों में हिन्दी द्वितीय भाषा के रूप में पढ़ाई जाती है, वहाँ भी हिन्दी के स्थायी प्राध्यापकों का अभाव है। परीक्षाओं के मौसम से कुछ ही पहले कोई बेरोज़गार पीएचडी या एम०ए० पास 'गरज़मंद' छात्र 'दिहाड़ी' पर रख लिया जाता है। पूरे वर्ष का पाठ्यक्रम कुछेक घंटों में निबटा देना इस 'हिन्दी टीचर' की जिम्मेदारी है। बी०ए० का पूरा कोर्स पढ़ाने का रेट कुछ हज़ार रुपए बंधा हुआ है। हिन्दी पुस्तकों, अख़बारों, शैक्षिक विभागों, सरकारी कार्यालयों में हिन्दी अनुभागों और हिन्दी अधिकारियों की हालत यहाँ भी देश के अन्य भागों से बेहतर नहीं है। हिन्दी समुदाय को इस बात का अहसास ही नहीं है कि साहित्य की अभिव्यक्ति का माध्यम भाषा कैसे सामाजिक परिवर्तन की भूमिका में उतरती है और दुर्व्यवस्था के खिलाफ़ हथियार का काम करती है। ऐसी हालत में अहिंदी भाषी प्रान्त में हिन्दी लेकर पढ़ने वाले छात्रों से शिकायत का कोई अर्थ नहीं है। इस सन्दर्भ में हिन्दी भाषी समुदाय, सरकारी ख़रीद का भ्रष्ट तन्त्र और बाज़ारवाद किसका दोष अधिक है बताना मुमकिन नहीं।

स्मृति/लेखा

छोट्चा

— डॉ० लक्ष्मीधर मालवीय
जापान

सन् 59 के आसपास की बात होगी, इलाहाबाद विश्वविद्यालय में मेरे अध्ययन का अन्तिम वर्ष था, मैं अपनी थिसिस पूरी करने में इस कदर जुटा हुआ था कि सिर उठाकर इधर-उधर देखने तक का अवकाश न था। मेरी माता पिछले कुछ दिनों से खिन्न रहा करती थीं। देखता, अकेले में वह दो-चार बूँद आँसू गिराकर आँख पोंछ लेतीं। कारण मैं जानता था, फिर भी अपनी व्यस्तता का मारा मैं, देखा-अनदेखा कर देता।

एक शाम घर लौटा तो माँ मेरे निकट आकर बोलीं, ''बाबू ने मुझे याद किया है, मैं उन्हें देखने दिल्ली जाऊँगी। नहीं तो मेरे मन में जीवन भर के लिए मलाल रह जाएगा।''

'बाबू' मैं अपने पिता को सम्बोधित करता था—मैं ही नहीं, मेरी पीढ़ी के भी भाई-बहिन उन्हें यों पुकारते थे। मैंने होश सम्भाला, तब से अपने पिता को प्रायः सदा घर से अनुपस्थित पाया। वह उन दिनों दिल्ली ही की ओर कहीं थे, इस समय स्मरण नहीं आ रहा, कहाँ।

लेकिन माँ जिन्हें 'बाबू' कह रही थीं वह उनके अकेले और लाड़ले देवर, मेरे चाचा, पंडित गोविंद मालवीय, जिन्हें उनकी अपनी संतानों सहित हम सब भाई-बहिन 'छोटे चाचा' का प्रयत्नलाघव, 'छोट्चा' पुकारते थे। पहले संयुक्त परिवार में कई दर्जन सदस्य हुआ करते—हमारे यहाँ ही दस भाई और अठारह बहिनें थीं। ऐसे में सम्बोधन के नाम रखने की रीति बड़ी तर्कसंगत हुआ करती थी। पं० रमाकांतजी की पत्नी, मेरी बड़ी ताई—'भाभी'; छोटी ताई—'छोटी भाभी'; तो मेरी माता—'नई भाभी'; 'भइया'— रमाकांतजी; 'छोटे भइया'— उनके छोटे भाई राधाकांतजी; तो मेरे पिता—'राजा भइया'। कदाचित् सबसे छोटी पीढ़ी सम्बोधन तय करती रही होगी। यही ढब हम दस भाइयों के घरेलू नामों में था।

'छोट्चा' (पं० गोविन्द मालवीय) उन दिनों काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के वाइस चांसलर थे, साथ ही संसद सदस्य भी होने से अधिवेशन के समय दिल्ली-बनारस एक किए रहते थे। याद आता है, एक बार मैं ट्रेन पर सवार होने के लिए इलाहाबाद स्टेशन पर पहुँचा तो देखा, वह रुकी हुई ट्रेन से उतरकर प्लेटफार्म पर खड़े हैं। अपने घर के अति निकट आकर कुछ ही देर के लिए सही, एक बार गाड़ी से नीचे उतर पड़ने का उन्हें लोभ हुआ होगा।

इसके तीन या चार वर्ष पहले की बात है, मैंने विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया ही था, कि उन्होंने मुझे दिल्ली अपने पास बुलाया था। तब मैं

कम्युनिस्ट पार्टी का सक्रिय कार्यकर्ता था, अति करने का पारिवारिक संस्कार रक्त में, उस काम के पीछे सुधि-बुधि खोए हुए था। 'छोट्चा' ने अपने सामने मुझे बैठाकर कई घंटे तक मुझसे वाद-विवाद किया—मुझे कम्युनिस्ट पार्टी से विरत करने के लिए नहीं, बल्कि मेरे विचारों की परिपक्वता से कहीं अधिक मेरे संकल्प की निष्ठा परखने के लिए। आज यह सोचकर जितना अचरज होता है, उससे कहीं अधिक संतोष और गर्व का भी अनुभव होता है कि विचार स्वातन्त्र्य की जितनी अधिक—प्रायः बेलगाम छूट—हमारे परिवार में थी उतनी तो आज पश्चिमी देशों में भी सभी परिवारजनों को समान रूप से न प्राप्त होगी। हाँ, अनिवार्य शर्त मात्र एक ही है—स्वेच्छाचार की पूरी छूट है, मगर घर की ड्योढ़ी से सदा के लिए बाहर निकल कर!

श्री कपिलदेव मालवीय, कांग्रेस के प्रसिद्ध नेता केशवदेवजी के बड़े भाई, ने कम ही उम्र में वकालत के पेशे में बड़ा नाम कमाया था। पड़ोस में आनन्द भवन, पं० मोतीलाल नेहरू के साथ प्रायः ही उनकी शाम बीतती, शराबनोशी करते हुए। थे तो वह शुद्ध शाकाहारी मगर मदिरापान की लक्ष्मण रेखा का उन्होंने उल्लंघन किया। मेरे पिता के वह लगभग हमउम्र और बड़े अंतरंग थे। कपिल भइया ने नई-नई वकालत शुरू की थी, सूरजकुंड पर दफ़्तर खोला था.....

बाहर लबे-सड़क, चबूतरे पर बैठकर वह अपनी दाढ़ी बना रहे थे। हिन्दू-मुस्लिम दंगा भड़क उठने से सारे शहर में कर्फ़्यू लगा हुआ था। पुलिस ही नहीं मिलिटरी की गाड़ियाँ गश्त लगा रही थीं। अचानक सुनाई दिया, उनके घुटनों के पास बूट से ठकठकाते हुए— WHO are you! उन्होंने पलटकर देखा, एक घुड़सवार गोरा था। उन्होंने उसपर निगाह टिकाए, थिराए हुए कंठस्वर से प्रतिप्रश्न किया—With more propriety I ask : WHO are you !.....

आर्थिक साधन का इतना अभाव कि वह ऑफ़िस में क़ायदे से टेबुल-कुर्सी तक न लगवा सके थे—एक टेबुल, वह भी टूटा हुआ, वह मेरे पिता से माँग कर ले गए थे। मेरे पिता ने उन्हें परिवार की मर्यादा से बाहर आचरण करने को लेकर एकाध बार चेतावनी दी, ''कपिल, ऐसा करने पर बिरादरी तुम्हें छोड़ देगी।''

कपिल भइया ने उत्तर दिया, ''चाचा, बिरादरी मुझे छोड़े, उसके पहले आज से मैं बिरादरी को छोड़ता हूँ।''

इसके बाद परिवार में किसी का विवाह हो कि किसी की मृत्यु, वह उसमें सम्मिलित न हुए। इस पर भी परिवार के हर सदस्य के लिए उनका द्वार खुला रहता। मुझे याद है, तपेदिक़ में जीवन की अन्तिम घड़ियाँ वह गिन रहे थे, कि मुझे एक बार देखने की इच्छा उन्होंने किसी के द्वारा मेरी माँ तक कहलाई। बिरादरी की अति संकुचित परिधि, मेरे पिता और कपिल भइया चाचा-भतीजा, तो व्यास परिवार की दो कन्याएँ, मेरी माता और कपिल भइया की पत्नी, 'तारा जीजी' पुकारता था, बुआ-भतीजी—और एक ही उम्र की होने के सबब बचपन के दिनों से सहेलियाँ!

मैं तब छह-सात साल का रहा हूँगा। माँ मुझे लेकर जॉर्ज टाउन, कपिल भइया के बँगले पहुँची तो मैं दौड़कर उनके कमरे में घुसने लगा कि उन्होंने मुझे डाँटकर दरवाजे ही पर रुक जाने को कहा।

कुछ देर तक वह चौखट पर खड़े हुए बालक को देखते रहे फिर उन्होंने मुझे वहाँ से हटा ले जाने के लिए कहा.....

क्रमशः

वैश्वीकरण के दौर में हिन्दी की स्थिति : एक अवलोकन

— डॉ० शेख अब्दुल वहाब, तमिलनाडु

'वैश्वीकरण' भारतीय संस्कृति का प्राचीन आदर्श 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का नवीनतम संस्करण है। अन्तर मात्र यह है कि 'वसुधैव कुटुम्बकम्' में भावना का मूल-मंत्र था, तो 'वैश्वीकरण' में तकनीक (विचारों) का यंत्र-विधान निहित है। वास्तव में वैश्वीकरण विश्वभर में व्याप्त वह प्रक्रिया है जिससे प्रत्येक दिन के अनुभव वस्तुओं व विचारों के प्रसारण से प्रभावित होते हैं। परिष्कृत सूचना एवं यातायात की तकनीकी विधियाँ और सेवाएँ, बड़ी मात्रा में जन साधारण का देशान्तरण, आर्थिक गतिविधियों का स्तर आदि वैश्वीकरण के अन्तर्गत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभानेवाले तत्त्व हैं।

विश्वभर का प्रत्येक देश, भूभाग वैश्वीकरण की इस अपरिहार्य प्रक्रिया से प्रभावित हुआ है या फिर होता जा रहा है। अब यह एक स्थापित वास्तविकता है कि हम सब इस प्रक्रिया के परिणामों को प्रत्यक्षतः या अप्रत्यक्षतः भोग रहे हैं। इसके साथ-साथ यह भी सत्य है कि हिन्दी का वैश्वीकरण हो चुका है। भारत विश्व का एक बड़ा बाज़ार है। वैश्वीकरण के इस दौर में विकसित देशों की दृष्टि भी, इस महा उपनिवेश के बाजार पर टिकी हुई है। स्वाभाविक रूप से यहाँ की राजभाषा एवं बहुसंख्यक लोगों द्वारा बोलने और व्यवहार में लायी जानेवाली भाषा हिन्दी से तथाकथित बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का साक्षात्कार हुआ जिससे हिन्दी के प्रति उनका आकर्षण अपने लाभ की दृष्टि से ही सही बढ़ा। वैश्वीकरण के सकारात्मक पक्ष के प्रभाव का हिन्दी के प्रचार-प्रसार की दृष्टि से यह एक शुभ परिणाम कहा जा सकता है।

डॉ० शेरसिंह बिश्ट ने लिखा है, ''वैश्वीकरण के सन्दर्भ में जहाँ तक हिन्दी भाषा का सम्बन्ध है, हिन्दी न केवल भारत की राजभाषा एवं सम्पर्क भाषा है, वरन् विश्व में बोली जानेवाली दूसरी सबसे बड़ी भाषा है, जिसका प्रयोग लगभग 22 देशों में 80 करोड़ से भी अधिक लोगों द्वारा किया जाता है।'' इस भाषा का साहित्य अत्यन्त समृद्ध है। किन्तु वैश्वीकरण के इस दौर में हिन्दी के प्रयोजनमूलक पक्ष को भी समृद्ध बनाना होगा। सूचना-प्रौद्योगिकी के साथ इसे अधिक से अधिक जोड़ना होगा। चूँकि हिन्दी का वैश्वीकरण हो चुका है। इसलिए इसके व्यावहारिक रूप का प्रसारण होना चाहिए। बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के लिए भारत एक बड़ा बाजार है। तो यहाँ की राष्ट्रभाषा-राजभाषा-सम्पर्क भाषा हिन्दी का, बाजारवाद की दृष्टि से, अपना विशिष्ट महत्त्व है। अपने उत्पादनों के उपभोक्ताओं की संख्या बढ़ाने के लिए हिन्दी में विज्ञापनों का उपयोग किया जा रहा है। इन विज्ञापनों के माध्यम से हिन्दी सुदूर गाँवों तक पहुँचती है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया को सांस्कृतिक-संकट मानकर, भावना और संवेदना के स्तर पर विचार करेंगे तो वैश्वीकरण की चुनौती को स्वीकार नहीं कर पाएँगे। अंग्रेजी के समकक्ष हिन्दी को आज की परिवर्तित परिस्थितियों के अनुरूप अपने आपको ढालना होगा। वैश्वीकरण के दौर में हिन्दी का यह नया रूप मीडिया, पत्र-पत्रिकाओं, फिल्मों, दूरदर्शन आदि माध्यमों से उभर रहा है। अनुवाद का क्षेत्र अछूता नहीं रहा है। हिन्दी की वैश्वीकरण-प्रक्रिया में अनुवाद की भूमिका भी महत्त्वपूर्ण है।

वैश्वीकरण के पूर्व 'मेधा निष्कासन' की बात देश में चल रही थी। अंग्रेजी में इसे 'Brain Drain' (ब्रेन ड्रेन) कहा जाता है। ऑक्सफोर्ड कोश के अनुसार यह ''कुशाग्रबुद्धि व्यक्तियों का स्वदेश छोड़कर नौकरी के लिए विदेश जाना, मेधा पलायन है।'' जिसकी प्रासंगिकता, आधुनिक सन्दर्भ में, वैश्वीकरण के इस दौर में लगभग समाप्त है। आज विदेशों में बड़ी तादाद में भारत की युवा-मेधा प्रौद्योगिकी विशेषज्ञ, प्रोग्रामर, सॉफ्टवेयर अभियंता, प्रविधिज्ञ, मिस्तरी जैसे पदों पर कार्यरत हैं। इसके साथ हिन्दी भी विदेश पहुँचती है, तो निश्चित रूप से इसका प्रचार-प्रसार और अधिक होता है, हो भी रहा है। देश-शहर से होते हुए गाँव तक पहुँच रही वैश्वीकरण की प्रक्रिया के साथ हिन्दी ने भी वहाँ पहुँचकर वैश्वीकरण की चुनौती को स्वीकार कर, इसने अपनी समर्थता या क्षमता को सिद्ध किया है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी सम्पूर्ण भारत का प्रतिनिधित्व करती है। इसमें कोई सन्देह नहीं।

अत्र-तत्र-सर्वत्र

दुर्लभ ग्रन्थों के संरक्षण में मिलेंगे दस करोड़

वाराणसी। अखिल भारतीय व्यास महोत्सव में सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के मुख्य भवन में वेद-पुराण से जुड़े विभिन्न ग्रन्थों की लगी पुस्तक प्रदर्शनी का उत्तर प्रदेश के संस्कृति मंत्री सुभाष पाण्डेय ने उद्घाटन करने के साथ-साथ पुस्तकालय में जाकर दुर्लभ पांडुलिपियों व ग्रन्थों का अवलोकन भी किया। इस दौरान संस्कृति मंत्री ने इन पांडुलिपियों व ग्रन्थों के संरक्षण हेतु उत्तर प्रदेश शासन की ओर से दस करोड़ रुपये का अनुदान दिए जाने का कुलपति प्रो० वी कुटुंब शास्त्री को भरोसा दिलाया। संस्कृति मंत्री ने सरस्वती भवन पुस्तकालय में महर्षि व्यास के दुर्लभ ग्रन्थों को भी देखा। इसमें 1833 से 1950 तक के सैकड़ों ग्रन्थ रखे गए हैं।

विद्यानिवास के चिंतन सृजन पर होगी चर्चा

वाराणसी। प्रख्यात साहित्यकार स्व० विद्यानिवास मिश्र की स्मृति में आयोजित भारतीय लेखक शिविर में देश के मूर्धन्य साहित्यकार सहभागिता करेंगे। विद्याश्री न्यास की ओर से आयोजित कार्यक्रम में भाषा संस्थान भी सहयोग कर रहा है। न्यास के सचिव दयानिधि मिश्र के अनुसार 14 से 18 जनवरी तक 12 सत्रों में आयोजित शिविर में पं० मिश्र के चिंतन-सृजन के प्रमुख आयामों पर विशद् चर्चा होगी। जिसमें साहित्यकार केदारनाथ सिंह, अशोक वाजपेयी, शंकर लाल पुरोहित, काशीनाथ सिंह, मनु शर्मा, ऋता शुक्ला, जगदीश डिमरी का व्याख्यान होगा। इसमें गोपाल चतुर्वेदी, कृष्ण बिहारी मिश्र, कृष्ण दत्त पालीवाल, श्रीराम परिहार, उज्जैन के राममूर्ति त्रिपाठी, बीकानेर के नंदकिशोर आचार्य, प्रभाकर श्रोत्रिय, प्रभाकर मिश्र, रामाश्रय राय (दिल्ली) समेत कमलेशदत्त त्रिपाठी, शैलनाथ चतुर्वेदी, रत्ना लाहिड़ी, रामदेव शुक्ल, विद्याविन्दु सिंह तथा रमेशचंद्र द्विवेदी आदि भी सहभागिता करेंगे।

पटना पुस्तक मेला

पटना के गांधी मैदान में 8 नवम्बर से 16 नवम्बर तक चले वार्षिक पुस्तक मेले में इस बार भी, मंदी के असर के बावजूद पाठकों का उत्साह मंद नहीं दिखा। देशभर के छोटे-बड़े शताधिक प्रकाशकों ने जहाँ अपनी नई पुस्तकों के साथ मेले में भागीदारी की, वहीं बिहार के पाठकों ने भी अपनी मनपसंद पुस्तकों की जमकर खरीदारी की। मेले के दौरान रखे गए 'लेखक से मिलिए' कार्यक्रम में भी पाठकों की विशेष दिलचस्पी देखी गई और बिहार के अधपढ़ कहे जाने वाले जनसाधारण ने एक बार फिर दिखा दिया कि वे अपनी भाषा, उसके साहित्य और लेखकों को लेकर कितने सजग हैं।

कानपुर पुस्तक मेला

कानपुर के सरयूनारायण बाल विद्यालय में 8 से 16 नवम्बर तक छठा राष्ट्रीय पुस्तक मेला आयोजित किया गया। इसमें देश भर के लगभग सौ प्रकाशकों ने हिस्सेदारी की। मेले के दौरान लेखक-पाठक संवाद, कवि सम्मेलन और मुशायरों के अलावा कई कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। मेले में साहित्यिक पुस्तकों के अलावा स्वास्थ्य, जीवन शैली, व्यक्तित्व विकास व समाज तथा राजनीति से सम्बन्धित पुस्तकों की भी खासी बिक्री देखने को मिली।

कनाडा में हिन्दी आथर्स गिल्ड की स्थापना

पिछले दिनों ओकविल (टोरांटो), कनाडा में श्री विजय विक्रान्त, डॉ० शैलजा सक्सेना और श्री सुमन कुमार घई के संयोजकत्व में हिन्दी राइटर्स गिल्ड का उद्घाटन डॉ० महीप सिंह के हाथों सम्पन्न हुआ।

डॉ० महीप सिंह ने कहा कि जो समाज अपनी मूलभूत जड़ों से जुड़ा रहता है वही विकास कर पाता है। उन्होंने 'हिन्दी राइटर्स गिल्ड' जैसी संस्था की स्थापना को एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि कहा। इस अवसर पर उन्होंने अपनी कहानी 'कितने सैलाब' का भी पाठ किया।

सर्वश्री विजय विक्रान्त, निर्मल सिद्ध, भुवनेश्वरी पांडे, पाराशर गौड़, अमनोल सक्सेना तथा आशा बर्मन ने भी कार्यक्रम में सहभागिता की।

नेशनल बुक ट्रस्ट की यात्रा के 51 वर्ष

पुस्तक-प्रकाशन, पुस्तकोन्नयन तथा पठन-अभिरुचि की दिशा में सक्रिय और सतत कार्यरत नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया ने विगत 1 अगस्त को अपनी स्थापना के 51 वर्ष पूरे किए हैं। 1 अगस्त 1957 को देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने नेशनल बुक ट्रस्ट की स्थापना की थी।

सार्वभौम संस्कृत संस्थान में कालिदास साहित्य प्रदर्शनी

वाराणसी। कालिदास के साहित्य में भारतीय संस्कृति का सार निहित है। इस साहित्य का अध्ययन किए बिना कोई भी संस्कृत का विद्वान नहीं हो सकता है। इसमें मानव जीवन के मूल्यों के साथ ही संस्कारों का साहित्य समाहित है। ऐसे में मानव समाज की भलाई के लिए कालिदा के साहित्य में निहित तथ्यों का चिंतन व मनन करते रहना चाहिए।

यह उद्गार महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ में संस्कृत विभाग के उपाचार्य प्रो० प्रभुनाथ द्विवेदी ने व्यक्त किये। वह सार्वभौम संस्कृत प्रचार संस्थानम् में कालिदास साहित्य प्रदर्शनी का उद्घाटन करने के बाद समारोह को बतौर मुख्य अतिथि सम्बोधित कर रहे थे।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में शुरू होगा पांडुलिपि पाठ्यक्रम

पांडुलिपियों के संरक्षण, अनुवाद आदि को गतिमान करने के लिए काशी हिन्दू विश्वविद्यालय स्थित केन्द्रीय ग्रन्थालय ने भी पहल की है। इसके तहत पांडुलिपि पाठ्यक्रम शुरू करने की योजना है। ग्रन्थालय के प्रोफेर इंचार्ज प्रो० आर०एस० दुबे ने बताया कि पाठ्यक्रम शुरू करने का खाका बना लिया गया है और स्वीकृति के लिए राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन को प्रस्ताव भेजा गया है। स्वीकृति मिलते ही पाठ्यक्रम संचालन की अगली प्रक्रिया शुरू कर दी जाएगी।

हिन्दी विवि ने उत्तर प्रदेश में फैलाए पाँव

वर्धा के महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के महत्त्वपूर्ण पदों पर उत्तर प्रदेश से जुड़े संस्कृतिकर्मियों के कार्यभार सँभालने के बाद विवि की कई महत्त्वपूर्ण योजनाएँ भी अब उत्तर प्रदेश में आकार लेने जा रही हैं। विश्वविद्यालय ने उत्तर प्रदेश में रंगमंच के लिए केन्द्र बनाने, उन्नाव में महाप्राण सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला से जुड़ी रचनाओं का संग्रहालय बनाने और विदेशों में रह रहे हिन्दी प्रेमियों के अध्ययन के लिए लखनऊ में केन्द्र विकसित करने की योजना बनाई है। विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प्रसिद्ध आलोचक प्रो० नामवर सिंह हैं जबकि पिछले दिनों इसके कुलपति पद का साहित्यकार एवं आईपीएस अधिकारी विभूतिनारायण राय ने कार्यभार ग्रहण किया है।

स्वतन्त्रता के पहले भाषा और लिपि का प्रश्न राष्ट्रीय अस्मिता से जुड़ा था तब किसी को भी अंग्रेजी और रोमन मान्य नहीं थी।

अध्येताओं, पुस्तकालयों, शिक्षा संस्थाओं

के लिए

साहित्यिक तथा विभिन्न विषयों की हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत पुस्तकों का विशाल संग्रह

तीन हजार वर्ग फुट में विशाल शोरूम

विश्वविद्यालय प्रकाशन

विशालाक्षी भवन, चौक
(चौक पुलिस स्टेशन परिसर के पार्श्व में)
वाराणसी - 221 001 (उ०प्र०)
Phone & Fax : (0542) 2413741, 2413082
E-mail : vvp@vsnl.com & sales@vvpbooks.com
Website : www.vvpbooks.com

सम्मान-पुरस्कार

गोविन्द मिश्र को साहित्य अकादमी पुरस्कार

समकालीन कथा लेखन में अपनी विशिष्ट पहचान बनाने वाले प्रसिद्ध साहित्यकार **गोविन्द मिश्र** और उर्दू शायर **जयन्त परमार** समेत 21 लेखकों को वर्ष 2008 का साहित्य अकादमी पुरस्कार दिए जाने की घोषणा अकादमी के अध्यक्ष सुनील गंगोपाध्याय की अध्यक्षता में अकादमी के कार्यकारी मण्डल ने की। इन साहित्यकारों में सात उपन्यासकार, छह कवि, पाँच लघु कथाकार, दो आलोचक और एक निबन्ध लेखक शामिल हैं। पुरस्कार में प्रत्येक को 50-50 हजार रुपये, एक प्रशस्ति पत्र व ताम्रफलक दिया जाएगा। 17 फरवरी को एक समारोह में इन्हें पुरस्कृत किया जाएगा।

एक अगस्त, 1939 को बुन्देलखण्ड में जन्मे मिश्र को उनके उपन्यास 'कोहरे में कैद रंग' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार दिया जाएगा। इस बार अंग्रेजी के लिए किसी भी पुस्तक को पुरस्कार योग्य नहीं माना गया जबकि मैथिली और तेलुगू के पुरस्कार बाद में घोषित किए जायेंगे। यह पुरस्कार एक जनवरी, 2004 से 31 दिसम्बर, 2006 के दौरान प्रकाशित पुस्तकों पर दिया जायेगा। अकादमी के हिन्दी संयोजक विश्वनाथप्रसाद तिवारी ने बताया कि हिन्दी के लिए 13 लेखक पुरस्कारों की दौड़ में थे।

जाने माने उपन्यासकारों **रीता चौधरी** (असमिया), **विद्यासागर नारजरी** (बोडो), **गोविन्द मिश्रा** (हिन्दी), **श्रीनिवास बी० वैद्य** (कन्नड़), **अशोक कामत** (कोंकणी), **श्याम मनोहर** (मराठी) और **मित्तर सैन मीत** (पंजाबी), प्रसिद्ध कवियों **शरत कुमार मुखोपाध्याय** (बंगाली), **चंपा शर्मा** (डोगरी), **ए ओ मेमचौबी** (मणिपुरी), **प्रमोद कुमार मोहंती** (उड़िया), **ओम प्रकाश पांडे** (संस्कृत) और **जयंत परमार** (उर्दू), लघु कथाकारों में **सुमन शाह** (गुजराती), **श्री कीरत** (नेपाली), **दिनेश पंचाल** (राजस्थानी), **बादल हेमबाम** (संथाली) और **मेलांमई पोंनुसामी** (तमिल) आदि को पुरस्कृत किया जायेगा।

'अभिराज' राजेन्द्र मिश्र को 'पण्डितराज-सम्मान'

देववाणी-परिषद्, दिल्ली द्वारा आयोजित 21वें पण्डितराज-महोत्सव में सुप्रसिद्ध संस्कृत महाकवि, काव्यशास्त्रकार, राष्ट्रपति-सम्मानित-संस्कृतपण्डित, महामहोपाध्याय एवं सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति **प्रो० 'अभिराज' राजेन्द्र मिश्र** को 2008 के पण्डितराज-सम्मान से अलंकृत किया गया। इस अवसर पर प्रो० मिश्र को अलङ्करण-पत्र, उत्तरीय, श्रीफल तथा रु० 11,000/- की दक्षिणाराशि का चेक परिषद् की कार्यकारी अध्यक्ष श्रीमती रमादेवी शुक्ला ने समर्पित किया।

सम्मानित विद्वान् अभिराज राजेन्द्र मिश्र ने अपने वक्तव्य में संस्कृत कवियों की स्मृति में आयोजित समारोहों को साहित्य और संस्कृति के ऐसे अनुष्ठानों के रूप में रेखांकित किया जिनमें हम अपने गौरवमय अतीत को वर्तमान के साथ तुलनात्मक दृष्टि से देखकर अपनी दशा एवं दिशा निर्धारित कर सकते हैं।

आचार्य (डॉ०) राममूर्ति त्रिपाठी को 'तुलसी भारती' सम्मान

आचार्य (डॉ०) राममूर्ति त्रिपाठी को विकलांग विश्वविद्यालय, चित्रकूट से 'तुलसी भारती' सम्मान, तुलसी-जयन्ती के अवसर पर कुलाधिपति स्वामी रामभद्राचार्य द्वारा प्रदत्त किया गया।

इंदिरा गोस्वामी को हालैंड का प्रतिष्ठित पुरस्कार सम्मान

असमिया भाषा की मशहूर लेखिका **इंदिरा गोस्वामी** को भारतीय संस्कृति एवं विकास के लिए हालैंड के प्रतिष्ठित 'प्रिंसिपल प्रिंस क्लाज' पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। गोस्वामी को पिछले हफ्ते एम्सटर्डम में एक शानदार समारोह में प्रिंस फ्रिस्टो ने यह पुरस्कार प्रदान किया। एक लाख यूरो (करीब 64 लाख रुपये) का यह पुरस्कार प्राप्त करने वाली इंदिरा गोस्वामी पहली भारतीय हैं।

दिल्ली युनिवर्सिटी में पढ़ा चुकीं गोस्वामी के अनुसार पुरस्कार मिलने से अपने पैतृक गांव में अस्पताल बनवाने का उनका वर्षों पुराना सपना पूरा हो जाएगा। इसी कारण उन्होंने पुरस्कार राशि को असम के मिर्जा के अमरंगा गाँव के एक अस्पताल को दान में देने का निर्णय किया है। गोस्वामी के अनुसार ''मेरे पिता की इच्छा थी कि अमरंगा में एक अच्छा अस्पताल हो। लेकिन पैसों की कमी के कारण उनका यह सपना अधूरा रह गया था।''

असम के एक रूढ़िवादी परिवार में जन्मी गोस्वामी को उनकी मानवीय अनुभूतियों पर कहानियों एवं उपन्यास से शोहरत मिली। 2000 में उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उनकी प्रसिद्ध रचनाओं में 'एन अनफिनिश्ड आटोबायोग्राफी', 'द मैन फ्राम चिन्नमस्ता', 'द रस्टेड स्वोर्ड' और 'पेजेज स्टेंड विद ब्लड' प्रमुख हैं।

वीरेन्द्र प्रभाकर सम्मानित

नई दिल्ली। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की संस्था अमेरिकन बायोग्राफिकल इंस्टीट्यूट, अमेरिका द्वारा प्रसिद्ध फोटो-पत्रकार **वीरेन्द्र प्रभाकर** को दीर्घकालीन साहित्यिक, संगीत-नृत्य और विविध कलाओं की सेवा के लिए मैन ऑफ दि ईयर 2008-09 अवार्ड दिए जाने की घोषणा की गई है।

डॉ० देवेंद्र आर्य सम्मानित

पुणे। डांगरे सभागृह, हिन्दी भवन में समग्र दृष्टि तथा महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित समारोह में कवि **डॉ० देवेंद्र आर्य** को उनके काव्य संकलन 'आग लेकर मुट्ठियों में' पर 'कविवर श्री हरिनायारण व्यास अखिल भारतीय हिन्दी काव्य पुरस्कार-2008' से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के अध्यक्ष हिन्दी-मराठी साहित्य के समीक्षक डॉ० चंद्रकांत बांदिवडेकर ने कहा कि 'आग लेकर मुट्ठियों में' ऐसा गीत संग्रह है जिसमें शुरू से लेकर आखिरी पंक्ति तक जिजीविषा और संघर्ष की अनंत ऊर्जा को विभिन्न कोणों से, विभिन्न प्रतीकों और रूपकों के माध्यमों से अभिव्यक्त किया गया है।

जामिया मिल्लिया विश्वविद्यालय द्वारा सम्मान

नई दिल्ली। जामिया मिल्लिया विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में भारतीय शास्त्रीय नृत्यों की विदुषी लेखिका **डॉ० कपिला वात्स्यायन**, मुस्लिम विद्वान् असगर अली इंजीनियर तथा फिल्म अभिनेता नसीरुद्दीन शाह और अभिनेत्री व समाज-सेविका शबाना आजमी को मानद डॉक्टरेट की उपाधि से सम्मानित किया गया। कन्नड़ भाषा के प्रख्यात साहित्यकार यू०आर० अनंतमूर्ति समारोह के मुख्य अतिथि थे।

तपन चौधरी सम्मानित

कोलकाता। प्रख्यात बाँग्ला लेखक **तपन राय चौधरी** को पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री बुद्धदेव भट्टाचार्य ने 'विद्यासागर स्मृति पुरस्कार' से सम्मानित किया।

देवांशु पाल सम्मानित

जालंधर। पंजाब कला साहित्य अकादमी द्वारा आयोजित 12वें पुरस्कार वितरण समारोह में बिलासपुर की साहित्यिक पत्रिका 'पाठ' के सम्पादक एवं प्रसिद्ध साहित्यकार **देवांशु पाल** को उनकी विशिष्ट उपलब्धियों के लिए पंजाब के उद्योग मंत्री मनोरजंन कालिया द्वारा कला साहित्य अकादमी सम्मान प्रदान किया गया।

युवा हिन्दी व्यंग्य प्रतियोगिता

व्यंग्य विधा को संपुष्ट करने एवं उभरते व्यंग्यकारों को सामने लाने के उद्देश्य से **साहित्य अमृत** 'युवा हिन्दी व्यंग्य प्रतियोगिता' का आयोजन कर रहा है। प्रतियोगिता में व्यंग्य भेजने की अन्तिम तिथि 31 जनवरी, 2009 है। विस्तृत जानकारी हेतु सम्पर्क करें—

साहित्य अमृत, 4/19, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002

प्रोफेसर सुजान को धामा मेमोरियल अवार्ड

वाराणसी। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय स्थित कृषि विज्ञान संस्थान के प्रसार शिक्षा विभाग के **प्रो० डी०के० सुजान** को डॉ० ओ०पी० धामा मेमोरियल अवार्ड से सम्मानित किया गया है। गत दिनों राजेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, पूसा (बिहार) में आयोजित समारोह में कृषि मंत्री नीलमणि ने उन्हें यह पुरस्कार प्रदान किया।

कवि करुण को 'गोलवलकर पुरस्कार'

अलवर के वरिष्ठ कवि **श्री बलवीरसिंह 'करुण'** को संस्कार भारती, दिल्ली द्वारा आयोजित शरद कवि सम्मेलन में गुरु गोलवलकर पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यमुना तट पर सूरदास घाट पर आयोजित इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पूर्व केन्द्रीय मन्त्री डॉ० मुरलीमनोहर जोशी तथा अध्यक्ष दिल्ली की महापौर सुश्री आरती मेहरा थीं। पुरस्कार-स्वरूप कवि करुण को ग्यारह हजार रुपए सम्मान राशि, वाग्देवी की प्रतिमा, शॉल एवं श्रीफल प्रदान किए गए। साधना चैनल के निदेशक श्री मुकेश गुप्त ने तिलकाभिषेक करके कवि को पुष्पहार पहनाकर स्वागत किया।

दिनेश चमोला 'शैलेश' सम्मानित

विगत दिनों विभिन्न विधाओं में पाँच दर्जन से अधिक (71) पुस्तकें लिख चुके चर्चित साहित्यकार **डॉ० दिनेश चमोला 'शैलेश'** को हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीय स्तर पर उल्लेखनीय हिन्दी सेवा के लिए चन्द्र कुँवर बर्तवाल कलश संस्था, रुद्रप्रयाग द्वारा प्रतिष्ठित 'चंद्र कुँवर बर्तवाल रुद्र कलश शिरोमणि सम्मान-2008' से सम्मानित किया गया। यह सम्मान उन्हें रुद्रप्रयाग में आयोजित समारोह में हे०न०ब० गढ़वाल विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० एम०एस० रावत द्वारा प्रदान किया गया।

गणेशशंकर विद्यार्थी सम्मान समारोह सम्पन्न

भारत भवन, भोपाल में माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित सम्मान समारोह में दैनिक स्वदेश के प्रधान सम्पादक **श्री राजेन्द्र शर्मा** को राजस्थान पत्रिका के सम्पादक एवं विशिष्ट अतिथि श्री गुलाब कोठारी ने 'गणेश शंकर विद्यार्थी सम्मान' से सम्मानित किया। सम्मान-स्वरूप उन्हें शॉल, श्रीफल, प्रशस्ति-पत्र और एक लाख एक रुपए की राशि प्रदान की गई। समारोह में प्रदेश के वित्त मंत्री श्री राघवजी, प्रख्यात लेखक और पुरस्कार के निर्णायक मंडल के सदस्य श्री विश्वनाथ सचदेव और कुलपति श्री अच्युतानंद मिश्र उपस्थित थे। श्री राजेन्द्र शर्मा ने सम्मान-स्वरूप मिली राशि को माणिकचंद वाजपेयी पत्रकारिता संस्थान को देने की घोषणा की।

आलोक भट्टाचार्य को 'निराला सम्मान'

प्रमुख जनवादी कवि **श्री आलोक भट्टाचार्य** को वर्ष 2008 के प्रतिष्ठित निराला सम्मान से सम्मानित किया गया। मुंबई के आजाद मैदान के भव्य मंच पर महानगर की प्रमुख साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्था साहित्य कला मंच की ओर से आलोक भट्टाचार्य को सम्मान राशि, शॉल, श्रीफल एवं स्मृतिचिह्न भेंट करते हुए तीस वर्षों की उनकी साहित्य-सेवा को रेखांकित किया गया।

प्रो० टी० मोहन सिंह पुरस्कृत

आन्ध्र प्रदेश हिन्दी अकादमी ने **प्रो०टी० मोहन सिंह**, प्रधान सम्पादक 'संकल्प' एवं अध्यक्ष, हिन्दी अकादमी, हैदराबाद को उनकी साहित्यिक सेवाओं के कारण उन्हें 'डॉ० मोटूरि सत्यनारायण' पुरस्कार से आन्ध्र प्रदेश हिन्दी अकादमी द्वारा आयोजित हिन्दी दिवस समारोह के दौरान सम्मानित किया। एक लाख रुपये का यह पुरस्कार हर वर्ष तेलुगु भाषी एक हिन्दी साहित्यकार को दिया जाता है। इस अवसर पर **डॉ० एन०पी० कुट्टन पिल्लै** को मलयाली भाषी हिन्दी सेवी पुरस्कार, **डॉ० एम० उपेन्द्र** को कन्नड़ भाषी हिन्दी सेवी पुरस्कार, **श्री रवि श्रीवास्तव** को हिन्दी भाषी हिन्दी लेखक पुरस्कार, **प्रो० शुभद्रा वांजपे** को हिन्दी व दक्षिण भारतीय भाषाओं से इतर भारतीय भाषा-भाषी लेखक पुस्कार तथा **डॉ० पी० माणिक्यांबा** को तेलुगु की मौलिक उत्तम रचना के हिन्दी अनुवाद का पुरस्कार प्रदान किया गया। इन पाँचों विद्वानों को 25,000/- रुपए की धनराशि के साथ-साथ शॉल, पुष्पगुच्छ तथा वीणा देकर सम्मानित किया गया।

पुरस्कार कमनीयता को

हाल ही एषुत्तच्छन पुरस्कार से अलंकृत महाकवि **अक्कित्तम अच्युतन नंपूतिरि** को दक्षिण भारत के प्रमुख अखबार मातृभूमि की ओर से वर्ष 2008 का दो लाख रुपये का मातृभूमि वाङ्मय पुरस्कार देने की घोषणा हुई है। मलयालम के उपन्यासकार डॉ० पुनत्तिल कुंजब्दुल्ला और कवि के० सच्चिदानंदन आदि की निर्णायक समिति के अनुसार, महाकवि की कुव्वत और कमनीयतापूर्ण कविता में जो मानवीय जागृति है, उसकी पहचान स्वरूप उन्हें यह पुरस्कार दिया जा रहा है।

आलोक श्रीवास्तव तथा योगेंद्र आहूजा सम्मानित

मुंबई, वर्ष 2008 का 'हेमंत स्मृति अ०भा० कविता सम्मान' युवा कवि **आलोक श्रीवास्तव** (दिल्ली) तथा 'विजय वर्मा अ०भा० कथा सम्मान' **योगेंद्र आहूजा** को दिये जाने की घोषणा हेमंत फाउंडेशन की प्रबन्ध न्यासी श्रीमती संतोष श्रीवास्तव तथा सचिव डॉ० प्रमिला वर्मा ने की। फाउंडेशन के महासचिव कवि-पत्रकार आलोक भट्टाचार्य ने बताया कि आलोक श्रीवास्तव को उनके ग़ज़ल संग्रह 'आमीन' तथा योगेंद्र आहूजा को उनके कथा संग्रह 'अंधेरे में हंसी' के लिए उक्त सम्मान स्वरूप श्री राजस्थानी सेवा संघ संचालित 'श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल टीबड़ेवाला विश्वविद्यालय' (एसजेजेटी यूनिवर्सिटी, झुंझनूं, राजस्थान) तथा हेमंत फाउंडेशन के संयुक्त तत्त्वावधान में 17 जनवरी 2009 को मुंबई में होने वाले एक समारोह में पाँच हजार रुपये की सम्मान राशि, स्मृति चिह्न, शॉल और श्रीफल प्रदान किये जायेंगे।

महाराष्ट्र राज्य हिन्दी साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कार की घोषणा

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के प्रचारक तथा केन्द्र व्यवस्थापक, **श्री विट्ठल नारायण चौधरी**, नागपुर को महाराष्ट्र शासन के महाराष्ट्र राज्य हिन्दी साहित्य अकादमी ने 'गजानन माधव मुक्तिबोध मराठी भाषी हिन्दी लेखक पुरस्कार' से सम्मानित करने का निर्णय लिया है।

बिरला फाउंडेशन शोधवृत्ति

के०के० बिरला फाउंडेशन ने वर्ष 2009 की तुलनात्मक भारतीय साहित्य की शोधवृत्ति के लिए चुने गये प्रोफेसर के सच्चिदानंदन के नाम की घोषणा की है। मलयालम व अंग्रेजी के जाने माने विद्वान एवं कवि प्रो० के० सच्चिदानन्दन का चयन एक विद्वत मण्डल द्वारा किया गया है।

डॉ० श्रीमती पूर्णिमा केलकर पुरस्कृत

इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ के संस्कृत विभाग की व्याख्याता प्रज्ञाचक्षु **डॉ० श्रीमती पूर्णिमा केलकर** को इस वर्ष उज्जैन में विक्रम कालिदास पुरस्कार तथा नेशनल एसोसिएशन फॉर ब्लाइंड, मुम्बई द्वारा नीलम खुर्शीद कांगा पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया। गत वर्ष आपको दिल्ली में राष्ट्रपति एपीजे अब्दुलक कलाम द्वारा राष्ट्रपति पुरस्कार तथा इस वर्ष राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल द्वारा भी राष्ट्रपति पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया है।

पत्रकारिता पुरस्कार के लिए प्रविष्टियाँ आमंत्रित

हिन्दी पत्रकारिता में आर्थिक विषयों पर मौलिक लेखन के लिए दिए जाने वाले बनारस बीड्स आर्थिक पत्रकारिता पुरस्कार के लिए प्रविष्टियाँ आमंत्रित की गई हैं। प्रविष्टियाँ भेजने की अन्तिम तारीख 15 जनवरी है। पुरस्कार के प्रवर्तक रामगुलाम कन्हैया लाल चैरिटेबुल ट्रस्ट के अध्यक्ष अशोक कुमार गुप्ता ने कहा कि राष्ट्रीय स्तर पर 50 हजार, प्रदेश स्तर पर 21 हजार और वाराणसी जिले के लिए 11 हजार रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा। एक जुलाई 2007 से 30 जून 08 के बीच अखबारों में प्रकाशित अथवा रेडियो या टेलीविजन के किसी भारतीय चैनल से प्रसारित मौलिक लेखन के लिए यह पुरस्कार दिया जाएगा।

विशिष्ट समीक्षक/समालोचक, सन्त-साहित्य मर्मज्ञ डॉ० रामचन्द्र तिवारी की महत्त्वपूर्ण कृतियाँ

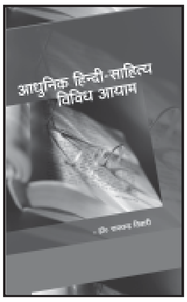

आधुनिक हिन्दी-साहित्य : विविध आयाम

(आलोचनात्मक निबन्धों का संग्रह)

डॉ० रामचन्द्र तिवारी

पृष्ठ : 252 **प्रथम संस्करण :** 2007

प्रस्तुत कृति डॉ० रामचन्द्र तिवारी द्वारा समय-समय पर लिखे गये आलोचनात्मक निबन्धों का संग्रह है। इसमें कुल 38 निबन्ध संगृहीत हैं। निबन्ध किसी सन्दर्भ-विशेष से जुड़े नहीं हैं। मोटे तौर पर इसमें 'परम्परा', 'इतिहास', 'पत्रकारिता', 'राष्ट्रीयता', 'तुलसीदास और निराला के राम की वैशिष्ट्य-गत एकता', 'रस सिद्धान्त और आधुनिक काव्य', 'आलोचना के प्रतिमान', 'राष्ट्र कवि माखनलाल चतुर्वेदी का कला-चिन्तन', 'हिन्दी-कविता के पिछले पचास वर्ष', 'विष्णुकान्त शास्त्री की आलोचना-यात्रा', 'आलोचना के विरोधी प्रतिमानों के बीच सामञ्जस्य की सम्भावना', 'लोक के प्रतीक और उनका परिदृश्य', 'हिन्दी रंगमंच के विकास में लोक-नाट्य-शैली की भूमिका' आदि विविध प्रकार के निबन्ध संगृहीत हैं। सभी निबन्ध सार गर्भित और सुचिंतित हैं।

मूल्य : सजिल्द : **300.00** ISBN : 978-81-7124-598-7
अजिल्द : **200.00** ISBN : 978-81-7124-599-4

हिन्दी का गद्य साहित्य

(संशोधित तथा परिवर्द्धित)

डॉ० रामचन्द्र तिवारी

पृष्ठ : 968 **षष्ठम संस्करण :** 2007

यह हिन्दी के गद्य-साहित्य का प्रामाणिक दस्तावेज है। समग्रता और सघनता दोनों दृष्टियों से यह पुस्तक महत्त्वपूर्ण है। समग्रता का आलम यह है कि लेखक ने भारतेन्दु पूर्व से लेकर आज तक के हिन्दी गद्य के विकासमान स्वरूप की प्रामाणिक पहचान प्रस्तुत की है तथा हर विधा में लिखी गयी सभी महत्त्वपूर्ण रचनाओं और पुस्तकों का लेखा-जोखा एवं आकलन प्रस्तुत किया है। यहाँ तक कि पत्र-पत्रिकाओं का भी संक्षिप्त किन्तु प्रायः समग्र परिचय दिया है। यह पुस्तक गद्य साहित्य का इतिहास भी है और मूल्यांकन भी।

इसका पाँचवाँ संस्करण सन् 2006 ई० में प्रकाशित हुआ था। सन् 2007 में, एक वर्ष बाद, छठा संस्करण प्रकाशित हुआ। विगत तीन वर्षों में हिन्दी गद्य का बहुमुखी विकास हुआ है। इस विकास का समग्र आकलन करके लेखक ने **प्रस्तुत छठे संस्करण** को यथा सम्भव सभी दृष्टियों से समृद्ध बनाने का प्रयत्न किया है। इस क्रम में पुस्तक के तीनों खण्डों में उसे पर्याप्त परिष्कार और परिवर्तन करना पड़ा है, विशेषतः दूसरे खण्ड में विगत तीन वर्षों से गद्य साहित्य की विविध विधाओं में प्रकाशित होने वाली पूरी सामग्री का समावेश और सारगर्भित आकलन अत्यन्त श्रम साध्य कार्य था, लेखक ने इसे पूरी निष्ठा से पूरा किया है। तीसरे खण्ड में श्री विष्णु 'प्रभाकर' का मूल्यांकन बढ़ा दिया गया है। शेष गद्यकारों के मूल्यांकन में यथा स्थान नयी सामग्री जोड़ दी गयी है। इस प्रकार 'हिन्दी का गद्य-साहित्य' अब हिन्दी गद्य की नवीनतम प्रवृत्तियों के विवेचन विश्लेषण से समृद्ध एक नितान्त उपयोगी सन्दर्भ ग्रन्थ बन गया है।

मूल्य : सजिल्द : **625.00** ISBN : 81-7124-358-4
अजिल्द : **440.00** ISBN : 81-7124-481-5

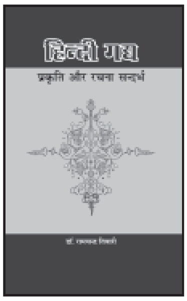

हिन्दी गद्य : प्रकृति और रचना सन्दर्भ

डॉ० रामचन्द्र तिवारी

पृष्ठ : 208 **प्रथम संस्करण :** 2004

इस पुस्तक में ऐसे निबन्धों का संग्रह है जो हिन्दी-गद्य की जातीय प्रकृति को किसी न किसी रूप में रेखांकित करते हैं। इस कृति में पाठकों को 'भारतेन्दु' से लेकर नये कवियों और कथा-लेखिकाओं के गद्य के रंगरूप और प्रकृति का आभास कराने का प्रयास किया गया है।

इस कृति में संगृहीत निबन्धों का उद्देश्य मात्र यह स्पष्ट करना है कि हिन्दी-गद्य की मूल प्रकृति न तो संकीर्ण है, न साम्प्रदायिक। उसे हम संघर्षशील हिन्दी-भाषी जनता की सम्पूर्ण मानसिकता के गतिशील प्रतिबिम्ब के रूप में देख सकते हैं।

मूल्य : सजिल्द : **200.00** ISBN : 81-7124-380-0
अजिल्द : **120.00** ISBN : 81-7124-379-7

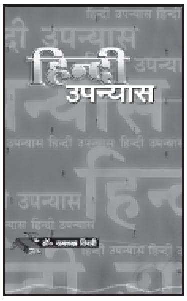

हिन्दी उपन्यास

डॉ० रामचन्द्र तिवारी

पृष्ठ : 212 **प्रथम संस्करण :** 2006

चर्चित पुस्तक 'हिन्दी का गद्य-साहित्य' में हिन्दी उपन्यासों पर विस्तार से विचार किया गया है। इसे एक स्वतन्त्र पुस्तक का रूप दिया जा सकता था। इधर प्रकाशित उपन्यासों पर संक्षिप्त किन्तु सारगर्भित समीक्षा-सामग्री जोड़कर इसे नया रूप दे दिया गया है और इसकी उपयोगिता बढ़ा दी गयी है। अब यह पुस्तक छात्रों और सामान्य जिज्ञासु पाठकों, दोनों के लिए उपयोगी प्रमाणित होगी।

मूल्य : अजिल्द : **100.00** ISBN : 81-7124-510-2

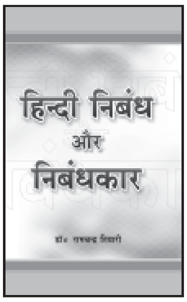

हिन्दी निबंध और निबंधकार

डॉ० रामचन्द्र तिवारी

पृष्ठ : 180 **प्रथम संस्करण :** 2007

प्रस्तुत कृति—'हिन्दी निबंध और निबंधकार' हिन्दी में अपने तरह की अकेली पुस्तक है। इसमें प्रारम्भ में दो भूमिकाओं के रूप में 'हिन्दी निबंध के स्वरूप' और बीसवीं सदी में उसकी उपलब्धियों पर विचार किया गया है। इसके बाद 22 निबंधकारों का आलोचनात्मक परिचय दिया गया है। यहाँ भारतेन्दु-युग से लेकर आज तक के सभी निबंधकारों को सामने रखकर उनकी कृतियों का परिचय और उनके निबंधकार-व्यक्तित्व का आंकलन किया गया है। ये प्रमुख निबंधकार हैं—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, बालकृष्ण भट्ट, प्रतापनारायण मिश्र, महावीरप्रसाद द्विवेदी, बालमुकुन्द गुप्त, सरदार पूर्ण सिंह, चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, महादेवी वर्मा, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, रामधारी सिंह दिनकर, अज्ञेय, डॉ० नगेन्द्र, डॉ० रामदरश मिश्र, डॉ० विद्यानिवास मिश्र, डॉ० शिवप्रसाद सिंह, विवेकी राय, निर्मल वर्मा, कुबेरनाथ राय, डॉ० कृष्णबिहारी मिश्र, रमेशचन्द्र शाह, श्री नर्मदाप्रसाद उपाध्याय।

मूल्य : सजिल्द : **250.00** ISBN : 978-81-7124-565-9
अजिल्द : **150.00** ISBN : 978-81-7124-566-6

आलोचक का दायित्व

डॉ० रामचन्द्र तिवारी

पृष्ठ : 208 **द्वितीय संस्करण :** 2005

आधुनिक साहित्य के सन्दर्भ में आलोचक के दायित्व का निर्धारण एक अत्यन्त विवादास्पद एवं जटिल प्रश्न है। प्रस्तुत कृति में आधुनिक हिन्दी-आलोचना की परिधि में आने वाले विविध सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक प्रश्नों के विश्लेषण-क्रम में आलोचक के गहन दायित्व के आकलन की चेष्टा की गई है। लेखक ने आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, डॉ० नगेन्द्र, डॉ० रामविलास शर्मा और डॉ० नामवर सिंह जैसे प्रख्यात आलोचकों की सैद्धान्तिक मान्यताओं एवं व्यावहारिक समीक्षा-पद्धतियों के विश्लेषण द्वारा यह स्पष्ट करने की चेष्टा की है कि इन आलोचकों ने किस सीमा तक और किस रूप में एक आदर्श आलोचक के दायित्व का निर्वाह किया है।

मूल्य : सजिल्द : **250.00** ISBN : 81-7124-446-7
अजिल्द : **150.00** ISBN : 81-7124-447-5

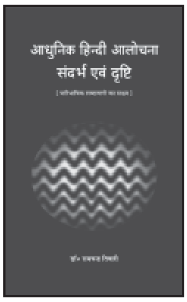

आधुनिक हिन्दी आलोचना : संदर्भ एवं दृष्टि (पारिभाषिक शब्दावली का साक्ष्य)

डॉ० रामचन्द्र तिवारी

पृष्ठ : 204 **द्वितीय संस्करण :** 2004

प्रस्तुत कृति में भारतेन्दु-युग से लेकर आज तक की हिन्दी समीक्षा के सांस्कृतिक-सामाजिक सन्दर्भ और उसके प्रभाव में निर्मित और प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दावली का ऐतिहासिक दृष्टि से विवेचन किया गया है। इस क्रम में लेखक ने हिन्दी के प्रतिनिधि समीक्षकों—आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी, डॉ० नगेन्द्र, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, डॉ० रामविलास शर्मा, मुक्तिबोध, नामवर सिंह, रामस्वरूप चतुर्वेदी—की समीक्षा-दृष्टि का विवेचन करते हुए यह स्पष्ट किया है कि उनके द्वारा प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दावली में उनका युग प्रतिबिम्बित है और उसके साक्ष्य पर उनकी समीक्षा-दृष्टि का स्पष्ट आंकलन किया जा सकता है। लेखक का यह विवेचन अत्यन्त प्रौढ़ एवं मौलिक है।

मूल्य : सजिल्द : **150.00** ISBN : 81-7124-390-8

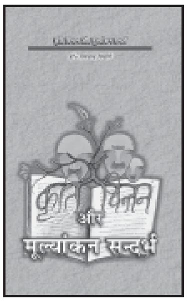

कृति चिन्तन और मूल्यांकन सन्दर्भ

डॉ० रामचन्द्र तिवारी

पृष्ठ : 240 **प्रथम संस्करण :** 2005

प्रस्तुत कृति समय-समय पर स्तरीय पत्रिकाओं में लेखक द्वारा लिखे गए समीक्षात्मक निबन्धों का संग्रह है। ये निबन्ध 'आलोचना', 'कसौटी', 'माध्यम', 'नया मानदण्ड', 'हिन्दी अनुशीलन' आदि पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं।

निबन्धों के चयन में इस बात का ध्यान रखा गया है कि इनके माध्यम से हिन्दी-साहित्य का पूरा परिदृश्य—पुराना और नया—पाठकों के सामने आ जाय।

इस कृति में पाठकों को लेखक के विस्तृत अध्ययन और गम्भीर अनुशीलनपरक विवेचन की क्षमता का परिचय मिलेगा।

मूल्य : सजिल्द : **200.00** ISBN : 81-7124-401-7

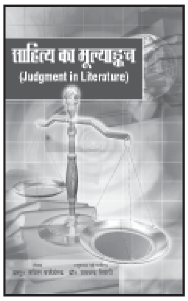

साहित्य का मूल्याङ्कन

डब्लू० बेसिल वर्सफोल्ड

अनुवादक एवं समीक्षक : **डॉ० रामचन्द्र तिवारी**

पृष्ठ : 152 **द्वितीय संस्करण :** 2008

डब्लू० बेसिल वर्सफोल्ड कृत 'जजमेंट इन लिटरेचर' पाश्चात्य समीक्षा-शास्त्र का संक्षिप्त परिचय करानेवाली बड़ी ही सारगर्भित रचना है। लेखक ने इस कृति में कला और साहित्य के सम्बन्ध में विवेचित एवं निर्णीत पाश्चात्य मान्यताओं को ऐतिहासिक क्रम से अत्यन्त सुलझे हुए रूप में प्रस्तुत कर दिया है। कला, साहित्य, प्राचीन आलोचना, रोमैण्टिक आलोचना, रचनात्मक साहित्य और कल्पना का आनन्द, उन्नीसवीं शती की समीक्षा, साहित्य के मूल्याङ्कन की प्रक्रिया, साहित्य के रूप—आदि अध्यायों के अन्तर्गत वह सब कुछ कह दिया गया है जो पाश्चात्य-समीक्षा के सिद्धान्तों को सारभूत रूप में प्रस्तुत करने के लिए अपेक्षित है। अनुवादक ने पुस्तक को अधिक उपयोगी बनाने के लिए प्रायः हर अध्याय के अन्त में परिशिष्ट रूप में तद्विषयक भारतीय मान्यताओं का भी विवेचन प्रस्तुत किया है। भूमिका में अनुवादक ने पाश्चात्य समीक्षा का—ग्रीक काव्यशास्त्र-रचना के युग से लेकर वर्तमान युग तक—संक्षिप्त इतिहास देकर कृति की उपयोगिता को और भी बढ़ा दिया है। भूमिका में बीसवीं शती के समीक्षा-सिद्धान्तों की भी समुचित चर्चा कर दी गई है।

मूल्य : अजिल्द : **100.00** ISBN : 978-81-7124-606-9

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और उनके समकालीन आलोचक

डॉ० रामचन्द्र तिवारी

पृष्ठ : 92 **प्रथम संस्करण :** 2007

प्रस्तुत रचना में प्रो० तिवारी ने आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, श्यामसुन्दरदास, कृष्णबिहारी मिश्र, पद्म सिंह शर्मा, लाला भगवानदीन तथा बाबू गुलाब राय के आलोचकीय व्यक्तित्व पर प्रभूत मात्रा में अपना विचार व्यक्त किया है। ध्यातव्य है कि आचार्य शुक्ल इन छह आलोचकों में कई से अवस्था में छोटे हैं। पर उनकी दृष्टि छहों आलोचकों से बहुत बड़ी है। शुक्लजी में विश्लेषण की अचूक क्षमता उन्हें एक समर्थ समीक्षक सिद्ध करती है। उनका हिन्दी और अंग्रेजी का ज्ञान उनकी आलोचना में पूर्णतः उतरता दिखायी पड़ता है। पर हिन्दी निर्माता की दृष्टि से अन्य पाँच समीक्षकों का आंकलन कम नहीं है। बाबू श्यामसुन्दरदास ने जहाँ हिन्दी को एक मानक भाषा और साहित्य के रूप में प्रतिष्ठित किया वहीं मिश्र बन्धुओं में श्रीकृष्णबिहारी मिश्र ने 'हिन्दी साहित्य के इतिहास' लेखन की परम्परा विकसित की। पद्म सिंह शर्मा ने तुलनात्मक आलोचना के माध्यम से पूर्व में की गयी अनेक त्रुटियों की ओर हिन्दी पाठकों का ध्यान आकृष्ट किया था। उक्त चमत्कार शर्माजी को प्रिय था। लाला भगवानदीन ने टीका पद्धति को एक उत्कर्ष प्रदान किया और बिहारी बन्धुओं द्वारा की गयी आलोचना पर बेबाक टिप्पणी कर हिन्दी में प्रत्यालोचना को महत्त्व प्रदान किया। बाबू गुलाब राय व्यावहारिक और सैद्धान्तिक दोनों प्रकार की आलोचना में समन्वयशील विचारक के रूप में जाने जाते हैं।

हिन्दी में आलोचक और आलोचना परम्परा को समझने के लिए यह पुस्तक महत्त्वपूर्ण है। विद्यार्थियों का समाज इससे विशेष लाभान्वित होगा। आलोचना की अन्य पुस्तकों में शुक्लजी को छोड़कर शेष समकालीन आलोचकों का मात्र नामोल्लेख तथा परिगणन होता रहा है। एक स्थान पर सभी समकालीन समीक्षकों का परिचय उनकी कृतियों और मन्तव्यों का मूल्यांकन तथा हिन्दी के निर्माण में उनकी भूमिकाओं का प्रत्याखान इस पुस्तक की विशेषता है।

मूल्य : अजिल्द : **60.00** ISBN : 81-7124-529-3

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

डॉ० रामचन्द्र तिवारी

पृष्ठ : 200 **संशोधित तथा परिवर्धित तृतीय संस्करण :** 2009

एक कोश निर्माता, इतिहासकार, निबन्ध लेखक, अनुवादक. आलोचक, सम्पादक और रचनाकार के रूप में आचार्य शुक्ल का अवदान अन्यतम है। इन सभी क्षेत्रों में उन्होंने पथ-प्रवर्तन का कार्य किया है। प्रस्तुत कृति में लेखक ने आचार्य शुक्ल के समग्र साहित्यिक अवदान के आकलन का विनम्र प्रयास किया है। पुस्तक का प्रथम संस्करण आचार्य शुक्ल के शताब्दी वर्ष में उनके प्रति श्रद्धा-सुमन अर्पित करने के प्रयास में लिखा गया था। हिन्दी जगत् ने पुस्तक को अपनाकर उत्साहवर्धन किया। पुस्तक के इस तृतीय संस्करण में दो अध्याय—'हिन्दी आलोचना के क्षेत्र में आचार्य शुक्ल की क्रान्तदर्शी भूमिका' तथा 'आधुनिकता और आचार्य शुक्ल का लोकादर्श' बढ़ाया गया है। शेष अध्यायों में यत्र-तत्र कुछ परिवर्धन और परिष्कार किया गया है।

मूल्य : सजिल्द : **200.00** ISBN : 978-81-7124-653-3
अजिल्द : **120.00** ISBN : 978-81-7124-669-4

निबंध निकष

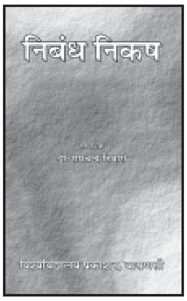

डॉ० रामचन्द्र तिवारी

पृष्ठ : 156 **चतुर्थ संस्करण :** 2007

निबंध आधुनिक गद्य-साहित्य की एक लोकप्रिय और सशक्त विधा है। डॉ० रामचन्द्र तिवारी के कुशल सम्पादन में उनकी सारगर्भित भूमिका एवं शब्दार्थ और टिप्पणियों से सुसज्जित इस पुस्तक में हिन्दी साहित्य के निर्माता साहित्यकारों—बालकृष्ण भट्ट, महावीरप्रसाद द्विवेदी, बालमुकुन्द गुप्त, अध्यापक पूर्ण सिंह, चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, माखनलाल चतुर्वेदी, हजारीप्रसाद द्विवेदी, महादेवी वर्मा, डॉ० नगेन्द्र, रामधारी सिंह 'दिनकर', सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय', डॉ० रामविलास शर्मा, हरिशंकर परसाई, विद्यानिवास मिश्र, कुबेरनाथ राय, शिवप्रसाद सिंह के महत्त्वपूर्ण विशिष्ट निबन्धों का अपूर्व संग्रह है। परिणामस्वरूप यह पुस्तक कई विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में पाठ्य-पुस्तक के रूप में स्वीकृत है।

मूल्य : अजिल्द : **50.00** ISBN : 978-81-7124-575-8

रामचरितमानस : अयोध्याकाण्ड

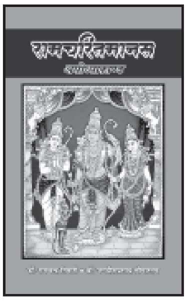

भूमिका : **डॉ० रामचन्द्र तिवारी**

पृष्ठ : 84 **पंचम संस्करण :** 2004
मूल्य : अजि. : **40.00**

कथा-संघटन, चरित्र-चित्रण, मार्मिक प्रसंगों के चयन, सांस्कृतिक मूल्यों के उन्नयन, भाव-निरूपण, भक्ति के महत्त्व-प्रतिपादन, दार्शनिक तत्त्वों के विश्लेषण तथा कलात्मक तत्त्वों के संयोजन, इन सभी दृष्टियों से तुलसी के 'मानस' का 'अयोध्याकाण्ड' अपना विशेष महत्त्व रखता है। तुलसीदास निर्विवाद रूप से हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं। 'रामचरितमानस' उनकी सर्वश्रेष्ठ रचना है और 'अयोध्याकाण्ड' अनेक दृष्टियों से 'रामचरितमानस' का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण सोपान है। इसका अध्येता काव्य के रस में मग्न होने के साथ ही भक्ति-रस में भी निमग्न होता है। प्रस्तुत पुस्तक में डॉ० रामचन्द्र तिवारी ने अपनी भूमिका के माध्यम से अयोध्याकाण्ड के समस्त महत्त्वपूर्ण तत्त्वों का समावेश करके एक अत्यन्त ही सारगर्भित विवेचना प्रस्तुत की है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल आलोचना कोश

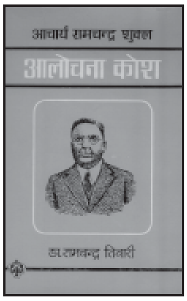

डॉ० रामचन्द्र तिवारी

पृष्ठ : 232 **प्रथम संस्करण :** 1986
मूल्य : सजि. : **50.00**

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हिन्दी आलोचना के आधार स्तम्भ हैं। उन्होंने हिन्दी में पहली बार भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य चिन्तन को आत्मसात करके अपने अद्भुत काव्य-विवेक का परिचय देते हुए जायसी, सूर और तुलसी जैसे कालजयी कवियों का रस-पद्धति के अनुकूल अत्यन्त मार्मिक एवं तात्विक मूल्यांकन किया है। उन्होंने सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक दोनों स्तरों पर सही अर्थों में हिन्दी की निजी समीक्षा के प्रतिमान प्रतिष्ठित किये हैं। प्रस्तुत कोश में उनकी कालजयी कृतियों में प्रयुक्त पारिभाषिक एवं अर्थ वैशिष्ट्ययुक्त शब्दों को ससन्दर्भ संगृहीत करके उन पर संक्षिप्त सारगर्भित टिप्पणियाँ दी गई हैं। सम्पादक ने इस क्रम में उन बिन्दुओं को भी रेखांकित किया है जहाँ परम्परा से हटकर आचार्य शुक्ल ने अपनी मौलिक दृष्टि का परिचय दिया है। प्रस्तुत कोश आचार्य शुक्ल की कृतियों को समझने में तो सहायक होगा ही आधुनिक हिन्दी आलोचना के स्वरूप को उद्घाटित करने की दिशा में भी महत्त्वपूर्ण प्रमाणित होगा।

कथा रामकै गूढ़

(संदर्भ : मानस और अन्य कृतियाँ)

डॉ० रामचन्द्र तिवारी

पृष्ठ : 152 **प्रथम संस्करण :** 1999

तुलसी ने दशरथ-पुत्र 'राम' को काव्य-नायक बनाकर विधि-निषेधमय रामकथा की सृष्टि की। राम के मनुष्यत्व पर विशेष बल देते हुए भी तुलसी ने मध्यकालीन धर्मनिष्ठ लोक-मानस को ध्यान में रखकर राम के पारम्परिक निर्गुणत्व को बनाए रखा। इस प्रकार उनके राम का व्यक्तित्व मनुष्यत्व और ईश्वरत्व के विरोधाभासी तत्त्वों का संश्लेष बन गया और रामकथा में एक प्रकार की रहस्यमयता और गूढ़ता आ गई। प्रस्तुत कृति के प्रथम चार अध्यायों में विभिन्न दृष्टियों से राम कथा की गूढ़ता का निदर्शन किया गया है। अन्य अध्यायों में तुलसी-काव्य के विभिन्न पक्षों का वैशिष्ट्य विश्लेषित है। सब मिलाकर इस कृति में तुलसी के गहन अध्ययन, लोक-हृदय समर्थित मर्यादित रचना-दृष्टि तथा भारतीय मनीषा पर उनके व्यापक एवं अमित प्रभाव की ओर विद्वत जनों का ध्यान आकृष्ट करने का प्रयास किया गया है।

मूल्य : सजिल्द : **125.00** ISBN : 81-7124-238-3

संक्षिप्त रामचन्द्रिका

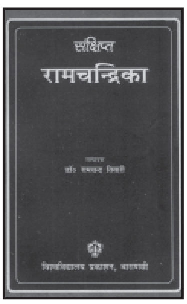

डॉ० रामचन्द्र तिवारी

पृष्ठ : 144 **मूल्य :** अजि. : **20.00** **संस्करण :** 2002

मध्ययुगीन हिन्दी कवियों और आचार्यों में केशव का विशिष्ट स्थान है। प्रस्तुत पुस्तक के भूमिका-भाग में केशव की सभी कृतियों और उनके सम्पूर्ण व्यक्तित्व को ध्यान में रखकर संगठित समीक्षात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। व्याख्या-भाग में केशव की रामचन्द्रिका के प्रथम चार काण्डों के कतिपय अंशों की सरल, सुबोध और स्पष्ट व्याख्या प्रस्तुत की गयी है। यथास्थान अलंकारों एवं काव्यगत विशेषताओं की ओर भी संकेत किया गया है। पुस्तक विद्यार्थियों और केशवप्रेमी विद्वानों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

मध्ययुगीन काव्य साधना (शीघ्र प्रकाश्य)
डॉ० रामचन्द्र तिवारी

पृष्ठ : 300 **संशोधित एवं परिवर्धित संस्करण :** 2009

प्रस्तुत कृति में हिन्दी-साहित्य के पूर्व-मध्यकाल (संवत् 1375-1700) की सीमा में आने वाले छः कवियों—कबीर, जायसी, सूरदास, नन्ददास, तुलसीदास और केशवदास और उत्तर-मध्यकाल (संवत् 1700-1900) की सीमा में आने वाले दो कवियों—बिहारी और घनआनँद का मूल्यांकन किया गया है। प्रारम्भ में पृष्ठभूमि के अन्तर्गत मध्ययुग के पूरे साहित्य को दृष्टि में रखते हुए तत्कालीन सांस्कृतिक चेतना की समीक्षा की गई है।

प्रस्तुत अध्ययन में लेखक ने काव्य-कृतियों के अनुशीलन के आधार पर उनमें प्रतिबिम्बित ऐसे जीवन-मूल्यों को प्रत्यक्ष करने की चेष्टा की है जिनसे चिपकी रहकर मध्ययुगीन जनता अपना अस्तित्व सुरक्षित रखने में सफल हुई थी। कवियों का व्यक्तिगत मूल्यांकन करते समय लेखक ने आधुनिक समीक्षा-सिद्धान्तों के साथ ही उन आदर्शों को भी दृष्टि में रखा है जो तत्कालीन कवियों को निजी तौर पर मान्य थे। लेखक साहित्य, कला और दर्शन को समाज-निरपेक्ष नहीं मानता। उसकी दृष्टि में युग-विशेष के कलागत आदर्श तथा दार्शनिक विचार उस युग की सामाजिक, ऐतिहासिक चेतना के आधार पर ही प्रतिष्ठित होते हैं। सब मिलाकर वे उस युग की आकांक्षा के प्रतीक होते हैं। प्रस्तुत कृति में कवियों का मूल्यांकन करते समय लेखक ने इस दृष्टि को बराबर ध्यान में रखा है।

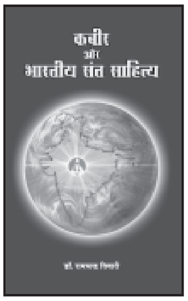

कबीर और भारतीय संत साहित्य
डॉ० रामचन्द्र तिवारी

पृष्ठ : 162 **प्रथम संस्करण :** 2001

कबीर मध्यकालीन भक्ति-आन्दोलन के केन्द्र-बिन्दु हैं। इस आन्दोलन की प्रत्येक हिलोर उनसे टकराती है। वे सभी से भींगते हैं। किन्तु कमल-पत्र की तरह सभी हिलोरों के ऊपर दिखाई देते हैं। ऐसे विलक्षण व्यक्तित्व के विषय में कुछ कहना, उसे समझने का प्रयत्न करना और उसके महत्त्व का उद्घाटन करना आसान नहीं है। प्रस्तुत कृति कबीर को समझने के प्रयत्न में लिखी गई है। इसमें समय-समय पर कबीर और संत-साहित्य पर लिखे गए निबन्ध संगृहीत हैं। कई निबन्ध उनकी छः सौवीं जयन्ती के उपलक्ष्य में उन्हें याद करते हुए लिखे गए हैं। निबन्धों में विषय-वैविध्य है किन्तु सभी का सम्बन्ध किसी न किसी रूप में कबीर और उनकी परम्परा से है।

मूल्य : सजिल्द : **180.00** ISBN : 81-7124-268-5

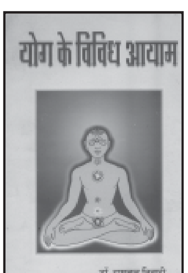

योग के विविध आयाम
डॉ० रामचन्द्र तिवारी

पृष्ठ : 140 **प्रथम संस्करण :** 1997

आज पूरे विश्व में योग के प्रति आकर्षण बढ़ रहा है। भौतिक सुख-सुविधाओं से ऊबे हुए विकसित देशों के युवक शान्ति की खोज में भटकते हुए योग के प्रति आकृष्ट हो रहे हैं।

प्रकट है कि योग-विद्या का ज्ञान और उसकी सही समझ आज के युग की एक आवश्यकता है। प्रस्तुत कृति इस अभाव की पूर्ति की दिशा में एक प्रयास है। इसमें योग-विद्या से सम्बद्ध प्रायः सभी महत्त्वपूर्ण विषयों को यथासम्भव बोधगम्य शैली में प्रस्तुत किया गया है। प्रत्येक स्तर पर यह ध्यान रखा गया है कि वर्तमान युग-सन्दर्भ में योग की प्रासंगिकता प्रमाणित हो और उसके महत्त्व को ठीक-ठीक समझा जाय।

मूल्य : अजिल्द : **40.00** ISBN : 81-7124-178-6

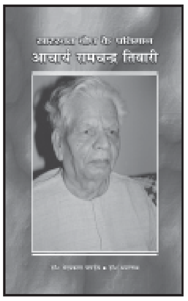

सारस्वत बोध के प्रतिमान : आचार्य रामचन्द्र तिवारी
डॉ० वेदप्रकाश पाण्डेय, डॉ० अमरनाथ

पृष्ठ : 340 **प्रथम संस्करण :** 2005

आचार्य रामचन्द्र तिवारी एक ऐसा व्यक्तित्व, ऐसा लेखक जिसने लेखन को साधना के रूप में ग्रहण किया, शिक्षण को जीवन का पवित्रतम धर्म माना और ईमानदारी को सहज आचरण।

आचार्य तिवारी में कबीर की दृढ़ता है तो रामचन्द्र शुक्ल का स्वाभिमान, दायित्व के प्रति कभी समझौता न करने वाली महावीरप्रसाद द्विवेदी की संकल्प शक्ति है तो हजारीप्रसाद द्विवेदी का पाण्डित्य। पढ़ना जिनका व्यसन है—पढ़ाना स्वभाव। 84 वर्ष की आयु में भी वे सक्रिय हैं। नये-पुराने विषयों पर उनके निबन्ध/विनिबन्ध निरन्तर छप रहे हैं। ग्रन्थ प्रकाशित हो रहे हैं। वे हिन्दी के गद्य साहित्य—आलोचना के विशेष सन्दर्भ में—के प्रामाणिक सन्दर्भ पुरुष के रूप में हमारे बीच विद्यमान हैं। 'हिन्दी का गद्य साहित्य' उनकी ऐसी मुकम्मल पुस्तक है कि केवल उसे ही पढ़ लिया जाय तो किसी अन्य गद्य की पुस्तक पढ़ने की कोई आवश्यकता नहीं होती। वह निरन्तर लिख रहे हैं। उनके दीर्घकालिक अनुभव और परिपक्व ज्ञान का परिपाक उक्त पुस्तक के रूप में तैयार हुआ है।

प्रो० रामचन्द्र तिवारी जीवन के नवें दशक में प्रवेश कर चुके हैं। उनके पास अनुभव का एक व्यापक संसार तथा अध्ययन का एक चिन्तनशील मानस विद्यमान है। वह आज भी साधक की तरह पढ़ने बैठते हैं और आलोचक की तरह विश्लेषण करते रहते हैं। प्रो० तिवारी का 50 वर्ष का जीवन अध्ययन व लेखन में व्यतीत हो गया। देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों में डॉ० तिवारी अपनी सटीक टिप्पणी के माध्यम से प्रभूत यश अर्जित कर चुके हैं।

इस ग्रन्थ को समृद्ध करने में प्रो० विष्णुकान्त शास्त्री, आचार्य राममूर्ति त्रिपाठी, प्रो० रामदरश मिश्र, डॉ० विवेकी राय, डॉ० कृष्णबिहारी मिश्र, डॉ० गोपाल राय, डॉ० युगेश्वर जैसे मनीषियों ने अपना रचनात्मक योगदान दिया है। आचार्य तिवारी के कृतित्व का आकलन करने के लिए इन रचनाकारों की रचनाएँ ही प्रमाण हैं। ग्रन्थ में तिवारीजी के समग्र लेखन की एक व्यवस्थित सूची दी गयी है। इससे उनके लेखन में रुचि रखने वाले विद्वानों और शोधार्थियों को बड़ी सुविधा होगी। इस कृति से रामचन्द्र तिवारीजी की सारस्वत साधना का किंचित परिचय मिल सकेगा।

मूल्य : सजिल्द : **250.00** ISBN : 81-7124-423-8

तिवारीजी की अध्ययनशीलता बेजोड़ है, प्रत्येक नयी पुस्तक उनके पुस्तकालय में उपलब्ध है। ऐसा समृद्ध पुस्तकालय शायद ही किसी अन्य साहित्य-समीक्षक का हो। वे बिना ग्रन्थ पढ़े कभी अपने विचार व्यक्त नहीं करते।

हमारे उनके सत्तावन वर्षों का अटूट सम्बन्ध और उनकी सारस्वत साधना का साक्ष्य यह ग्रन्थ है। उनके कितने शिष्यों ने उनसे सारस्वत दीक्षा प्राप्त की, कितने विद्वानों ने उनकी साहित्य निष्ठा को स्वीकारा, यह अपने में एक उदाहरण है। कभी भी उन्होंने अपने ज्ञान और बोध का प्रदर्शन नहीं किया, एकान्त साधक के रूप में सारस्वत साधना करते रहे। साहित्य, इतिहास दर्शन, अध्यात्म प्रत्येक विषय पर उनकी वार्ता में उनका गहन अध्ययन और मौलिक चिन्तन व्यक्त होता है। **—स्व. पुरुषोत्तमदास मोदी**

आज श्री मोदीजी हमारे बीच नहीं हैं। विश्वविद्यालय प्रकाशन कृतज्ञ है डॉ० रामचन्द्र तिवारी का जिन्होंने विश्वविद्यालय प्रकाशन के संस्थापक स्व० पुरुषोत्तमदास मोदीजी की अनुपस्थिति में भी विश्वविद्यालय प्रकाशन को अपनी छत्रछाया में सँभाल रखा है। आज तिवारीजी की ही प्रेरणा से विश्वविद्यालय प्रकाशन प्रयासरत है अपने संस्थापक द्वारा स्थापित आदर्शों एवं मानकों पर खरा उतरने हेतु।

यदा यदा हि धर्मस्य

स्वर्ग से मृत्युलोक की ओर खुलने वाले उस विशाल बरामदे में से उस समय मराठा अगरबत्ती की सुगन्ध उठ रही थी। बरामदे में मृत्युलोक से आयात किए गए कीमती पारदर्शक परदे लटके हुए थे जिसमें से भगवान इन्द्र और शचीरानी की आकृतियाँ झिलमिला रही थीं। भगवान इन्द्र इन दिनों छुट्टी पर थे और शचीरानी के साथ शतरंज की बाजी लड़ा रहे थे। स्टीरियो पर किसी भारतीय फिल्म की धुन धीमे-धीमे स्वर में बज रही थी और स्वर्ग के उस वातावरण को और भी स्वर्गीय बना रही थी। एक ओर कोने में सिंहासननुमा कुर्सी पर, बिना विभाग (और बिना काम) के मंत्री नारदजी तानपूरे पर खोए हुए सुरों को खोजने का असफल प्रयास कर रहे थे। वातावरण में एक प्रकार की स्निग्धता छाई हुई थी, तभी..., सामने के खंभे पर टँगे हुए बैरोमीटर का पारा जोर-जोर से उछलने लगा। नारदजी का ध्यान एकाएक उधर गया। उनकी तन्द्रा टूट गई। लगा, जैसे खोए हुए सुर मिल गए हों। मुँह से अकस्मात् ही निकल गया, ''प्रलय... महाप्रलय हो गया, भगवन्।''

'प्रलय' शब्द मात्र से वातावरण की गंभीरता एकाएक टूट गई। ''क्या हुआ देवर्षिजी?'' शचीरानी ने चिन्तित स्वर में पूछा।

''उधर देखिए, महारानी जी।'' देवर्षि ने बैरोमीटर की ओर संकेत करते हुए कहा। अब तक भगवान इन्द्र की तन्द्रा पूरी तरह टूट चुकी थी और वे बड़ी ही व्यग्रता से बैरोमीटर के उछलने वाले पारे की ओर देख रहे थे।

जब से नए इन्द्र ने स्वर्ग के शासन की बागडोर संभाली थी, तभी से उन्होंने स्वर्ग को अत्याधुनिक बनाने का प्रयास किया था। उन्होंने मृत्युलोक के कितने ही देशों से आर्थिक तथा राजनीतिक संबंध स्थापित कर लिये थे। उन देशों से व्यापार चल निकला था। स्वर्ग से एक विशिष्ट किस्म की शराब का निर्यात किया गया था, जिसके एवज में वहाँ इलेक्ट्रॉनिक उपकरण लगाए गए थे। इससे एक तो भगवान इन्द्र अन्य देशों की जानकारी के मामले में स्वावलम्बी हो गए थे, दूसरे देश-विदेश की यात्रा के सिलसिले में नारदजी पर, स्वर्ग के राजस्व का जो खर्च होता था, वह काफी हद तक घट गया था।

बैरोमीटर की ओर देखकर भगवान इन्द्र ने कहा—''ये छुट्टियाँ भी बेकार गईं, नारदजी। मृत्युलोक के एक बड़े देश भारतवर्ष में, जनतंत्र खतरे में पड़ गया है। कितने ही दिनों से मुझे सूचना मिल रही है कि वहाँ वस्तुओं के भाव आसमान छू रहे हैं। दिन-दहाड़े चोरी-डकैती तथा राजनीतिक हत्याएँ जैसी दुर्घटनाएँ हो रही हैं। जनता का मनोबल टूट रहा है और लोग पागलों की तरह किसी नई व्यवस्था की खोज में दौड़ रहे हैं।''

भगवान इन्द्र की बात को अत्यन्त सहज ढंग से लेते हुए नारदजी बोले—''लेकिन इसमें तो दोष आपका ही है, भगवन्।''

''मेरा दोष?'' भगवान इन्द्र ने साश्चर्य पूछा।

''और नहीं तो क्या? पिछले कितने ही दिनों से आप छुट्टियाँ मना रहे हैं। हमारे मंत्री भी चैन की ही बंशी बजा रहे हैं। कुछ भी काम नहीं हुआ है और अगर कुछ काम हुआ भी है तो वह केवल स्वर्ग की रूपसज्जा सँवारने में। अलबत्ता, आपका विशेष विभाग सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आदान-प्रदान के नाम पर, यहाँ की अप्सराओं और वहाँ की रूपसियों की अदला-बदली में व्यस्त रहा। आप चाहते तो भारत में नैतिकता का इतना ह्रास नहीं हुआ होता।''

पति पर हुए इस आकस्मिक हमले का प्रतिवाद शचीरानी ने किया। बोलीं— ''पहले तो आप ही सलाह देते हैं और बाद में इन्हें दोष देते हैं। आप ही ने तो कहा था कि भारत में इन दिनों सरकारी सन्तों की बाढ़ आ गई है और यदि समय रहते उनका प्रबन्ध नहीं किया गया तो हमारी स्वर्ग की लुटिया डूब जाएगी।''

''ठीक कहती हो, रानी।'' भगवान इन्द्र ने पत्नी का समर्थन करते हुए कहा— ''इनकी तो वह पुरानी आदत है। कोई आश्चर्य नहीं कि भारत में वर्तमान असंतोष के पीछे देवर्षिजी का ही हाथ हो। क्यों, देवर्षिजी?''

अपनी प्रशंसा में कहे गए संवाद से नारदजी उछल पड़े। तानपूरे पर अँगुलियाँ फिराते हुए बोले—''शायद आप नहीं जानते कि इन दिनों मैं किसिंजर को अपना गुरु स्वीकार कर चुका हूँ। यह बात और है कि लोग किसिंजर को अमरीकी नारद की संज्ञा देते हैं। किसिंजर की अपनी विशेषताएँ हैं। इधर वह पैरों में पंख बाँधकर शान्ति का अग्रदूत बनता फिरता है, तो उधर वास्तव में आगामी युद्धों के बीज बोता है। उसे समझना कठिन है। तभी तो, आपके प्रयासों से उसे शान्ति का पुरस्कार मिला और मैं बदनाम नारद ही रह गया। खैर, मैंने मृत्युलोक में लोक और तन्त्र दोनों को ही प्रसन्न रखने का प्रयत्न किया। उधर गल्ले की सरकारी खरीद जैसे समाजवादी कार्यक्रम कराकर मैंने सरकार तथा उनके अनुआइयों को प्रसन्न किया तो दूसरी ओर चीजों के दाम बढ़ाकर व्यापारी वर्ग को संतुष्ट कर दिया। आज मृत्युलोक में मँहगाई का इतना अधिक प्रचार किया जा रहा है, विपक्ष सरकारी पक्ष को बदनाम करने के लिए एड़ी-चोटी का पसीना एक कर रहा है, लेकिन क्या इन परिस्थितियों का सीधा लाभ वहाँ की जनता को ही नहीं हो रहा है? तिजोरियाँ किसकी भर रही हैं? वहाँ की जनता की ही न? साधारण जनता तो मँहगाई में ही विश्वास करती है, क्योंकि उसके बिना मँहगाई भत्ते की कल्पना करना असंभव है।''

मिलना हो नारदजी से तो पढ़ें : ⟶

कृष्णायन

रामबदन राय

द्वितीय संशोधित तथा परिवर्धित संस्करण : 2009 ई०

पृष्ठ : 404

सजिल्द : रु० 300.00

ISBN: 978-81-7124-682-3

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

श्री रामबदन जी विरचित कृष्णायन महाकाव्य भक्ति भाव से ओत प्रोत लोक हितकारी एक सांस्कृतिक रचना है। ग्रन्थ रचना का मूल उद्देश्य लोक भाषा में 'रामचरितमानस' की पद्धति पर कृष्ण कथा को भोजपुरी मिश्रित खड़ी बोली में प्रस्तुत करना है, जिसका नवाह्न, मास पारायण एवं अखण्ड पाठ सहज रूप में किया जा सके। कवि ने कथा के श्रोत श्रीमद्भागवत और सूर सागर से भले ही लिया है, किन्तु लगता है उनके मन मस्तिष्क पर इस ग्रन्थ को मानस की तरह लोकोपयोगी एवं लोकग्राही बनाने की बात बराबर रही है। लोक भाषा के खाँटी शब्दों एवं मुहावरों के अधिक प्रयोग से एकाध अर्द्धालियों में अश्लीलत्व एवं ग्राम्यत्व दोष झलक उठा है, जो भक्तिपरक ग्रन्थ के लिए समीचीन नहीं लगता। दूसरी ओर भोजपुरी की सुगन्ध से भरे शब्द, मुहावरे और लोकोक्तियाँ सूरसागर की तरह इस ग्रन्थ की उपलब्धि भी हैं। कहीं-कहीं मन को छूने वाले एकदम टटके प्रयोग भी हैं, यथा 'पाँव पटकि महि लोटन लागे।' यह शिशु द्वारा पाँव पटक-पटककर विरोध प्रकट वाला ऐसा स्वाभाविक चित्रण सूर साहित्य में भी नहीं दिखाई पड़ता। यत्र-तत्र संवाद शैली के प्रयोग से भी कथा में रोचकता आयी है। जिस प्रकार भागवत की कथा को सूरदास ने लोक जीवन एवं लोक संस्कृति से संपृक्त कर सर्वथा मौलिक रूप में प्रस्तुत किया, उसी तरह भक्त कवि ने कृष्ण कथा को पूर्वांचल के रीति-रिवाजों, लोक कथाओं, लोक मुहावरों से सराबोर कर एक नये रूप में प्रस्तुत करने का स्तुत्य प्रयास किया है। ग्रन्थ के सातवें खण्ड में उदात्त मानव मूल्यों सहित स्वस्थ शरीर के लिए बहुमूल्य उपदेश सरस शब्दावली में प्रस्तुत किये गये हैं। यह अंश आज के भोगवादी प्रदूषित वातावरण को नष्ट करने के लिए संजीवनी है।

—डॉ० मान्धाता राय

लब्धप्रतिष्ठ समालोचक

स्वर्ग का उल्लू

लेखक : ना० वि० सप्रे

मूल्य : रु० 100.00

प्राप्ति स्थान :

विश्वविद्यालय प्रकाशन

चौक, वाराणसी

अब तो बात फैल गई
[यादों, विवादों और संवादों की संस्मरणात्मक प्रस्तुति]
कान्तिकुमार जैन
प्रथम संस्करण : 2007 ई०
पृष्ठ : 264
सजिल्द : रु० 250.00
ISBN: 978-81-7124-586-4
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

बात न फैली होती तो?

—देवेन्द्र आर्य

कान्तिकुमार जैन संस्मरणों के प्रयोगकर्ता हैं। प्रयोगाधर्मी संस्मरणकार। अपनी चौथी पुस्तक 'अब तो बात फैल गई' में वे संस्मरणों की चौहद्दी को विस्तार देते प्रतीत होते हैं। यूँ भी भारतीय जनमानस में चौथ का, चौथेपन का बड़ा महत्त्व रहा है। तेली घराने के लिबिर लिबिर वाद और जाट घराने के लब्दीमार संस्करण से फैला कर संस्मरणों की अखिल भारतीय नागरिकता परिभाषित करने का उपक्रम है यह पुस्तक। डॉ० जैन कोरे संस्मरणकार ही नहीं, संस्मरणविधा के शास्त्र को रचने-गढ़ने और कालान्तर में उससे पुनः टकराकर आवश्यकतानुसार पुनर्सृजित करने वाले अकेले अध्येता हैं। उन्होंने न केवल संस्मरणों को साहित्यिक स्वीकृति ही दिलाई, उसे हिन्दी साहित्य के बाक्स आफिस पर हिट भी कराया। बाद में जब उन पर कमर्शियल फिल्मकार की तरह बिकाऊ संस्मरणकार का ठप्पा लगने लगा तो उन्होंने अपनी ही लीक से हट कर समान्तर सिनेमा के आर्ट फिल्म की तर्ज पर दूसरी धारा के सार्थक और अपेक्षाकृत अधिक विवेचनात्मक संस्मरण भी लिखे और दिखाया कि दृष्टि के साथ यदि प्रतिबद्धता और कलात्मक संयम का संयोग है तो संस्मरण को सभ्यता-समीक्षा का हथियार भी बनाया जा सकता है। हालांकि इस प्रक्रिया में संस्मरणों के आलेख बन के रह जाने का भी खतरा पैदा हो गया।

'जो कहूँगा सच कहूँगा' के बाद यह पुस्तक नए सिरे से संस्मरणशास्त्र की चुनौतियों से टकराती है। अपने लम्बे आमुख में डॉ० जैन का सुचिंतित, बौद्धिक व्यक्तित्व उभर कर सामने आता है। वे अब जीवितों और समकालीनों की संस्मरण-भूमि से आगे बढ़कर दिवंगतों की स्मृतियों में गदर मचाते हैं। उन्हें पता है कि विरोधी कहाँ वार कर सकते हैं। सो वे पहले ही पलटवार कर उन्हें समझाइश की जीवन-घुट्टी पिला देते हैं ताकि साहित्य-शुचिता मरोड़ उठनी भी हो तो न उठे।

संस्मरण आखिर क्या हैं? विगत को भाषा में याद करना ही तो है। देखे-सुने की याद से आगे बढ़कर, अनीन्द्रीय भोगे यथार्थ, सुने-सुनाए, पढ़े-पढ़ाए तथ्य-सत्य को भी अपनी जाती याद का जीवित हिस्सा बनाकर जैन साहब उस पर संस्मरणों की ग्राफ्टिंग करते हैं, कभी रिपोर्टिंग तो कभी समीक्षा में उतर जाते हैं।

जैन साहब ईको-फ्रेण्डली और मार्केट फ्रेण्डली शब्दों की तर्ज पर नया पद गढ़ते हैं—'पाठक फ्रेण्डली'। पाठक फ्रेण्डली संस्मरणों के वे प्रणेता हैं। उन्हें इस बात से चिढ़ है कि "हिन्दी का सामान्य लेखक अपने ज्ञान, अपने पाण्डित्य, अपने साहित्यिक अभिजात्य का रौब गालिब करने के लिए जितना व्यग्र दीखता है उतना पाठक तक सम्प्रेषणीय होने के लिए नहीं।" (पृ० V) उनके लेख "साहित्यकार यदि मशाल बरदार है तो उसे पाठकों के चेहरे भी दिखने चाहिए और पाठकों को भी उस मशाल बरदार का चेहरा जानने का मौका मिलना चाहिए।"

समीक्ष्य पुस्तक वाद, विवाद, संवाद तीनों खण्डों में बंटी है। न बंटी होती या कम से कम वाद-विवाद-संवाद की शैली से इतर शीर्षकों में होती तो बेहतर था। लगता है डॉ० जैन को कहीं न कहीं अहसास है कि वे संस्मरण विद्या में नामवर सिंह हैं। यह अहसास अगर उन्हें है तो गलत भी नहीं है। समकालीनों के बीच के अकेले संस्मरण शास्त्र विशेषज्ञ हैं। परन्तु संस्मरण विधा का नामवर बनने के लिए नामवर की छाया मत छूना मन, यह छोटे मुँह बड़ी सलाह उन्हें याद रखनी चाहिए।

इस पुस्तक में व्यक्ति केन्द्रित संस्मरणों से अलग समूह केन्द्रित, स्थान केन्द्रित और किन्हीं अर्थों में कालकेन्द्रित संस्मरण भी संग्रहीत हैं। हिन्दी विभागों पर लिखा गया संस्मरण समूह-स्थान और कालकेन्द्रित संस्मरण का बेहतरीन नमूना है।

अक्सर माना जाता है कि लेखन एक सतत प्रक्रिया है। लगातार अभ्यास, कागज कलम के सहारे। बनते बनते कोई बात बनने वाला क्षेत्र है साहित्य। परन्तु समझ में नहीं आता कि यह कैसे सम्भव हुआ कि एक इतना अच्छा, दृष्टिसम्पन्न, संघर्षशील, भाषा का 'हुनरमन्द', 'बेलौस', 'बेहिचक' सही बात का पक्षकार, अध्ययनशील, साहसी गद्यकार जिसके लेखन में कथा-उपन्यास के तत्त्व बिखरे पड़े हैं, इतने दिनों तक चुप रहा मगर क्षरित नहीं हुआ और जब अचानक उसकी संस्मरणात्मक अभिव्यक्ति कूकर के सेफ्टीवाल को फोड़ कर निकली तो धमाका हो गया। तुलसीदास की तरह नाना पुराण निगमा आत्मसात करते रहे कांतिकुमार की प्रतिभा विस्फोट का साक्षात्कार हिन्दी जगत ने किया। यदि ऐसा न हुआ होता तो? अगर बात न फैली होती तो? बात फैली इसके लिए विश्वविद्यालय प्रकाशन साधुवाद का पात्र है।

पाठकों के पत्र

आपके कुशल सम्पादन में प्रकाशित पत्रिका 'भारतीय वाङ्मय' का नवम्बर 08 अंक मिला। अंक की रचनाएँ ज्ञानवर्धक, विचारोत्तेजक और मननीय हैं। निम्नलिखित रचनाओं/आलेखों ने विशेष रूप से प्रभावित किया—1. शक्ति के विद्युत् कण, 2. शुद्ध हिन्दी लिखें, 3. अत्र-तत्र-सर्वत्र। इन रचनाओं/आलेखों के रचनाकार बधाई के पात्र हैं। आपके सम्पादन में पत्रिका सफलता के शिखर को स्पर्श कर आपको यशस्वी बनाए, ऐसी मंगलाशा है। **—डॉ० वीरेन्द्र कुमार सिंह**
उपनिदेशक, राजभाषा, फरीदाबाद

'भारतीय वाङ्मय' का अक्टूबर-08 अंक मेरा हाथ में आज ही आया है। इसके लिए धन्यवाद। यह अंक साहित्यिक एवं सांस्कृतिक सूचनाओं से परिपूर्ण है और समसामयिक साहित्यिक गतिविधियों से परिचय कराता है। इस रूप में इसकी विशिष्टता और महत्त्व को अवश्य ही जाना जाएगा। **—हरिपाल त्यागी,** दिल्ली

नव-वर्ष की शुभकामना लें। 'भारतीय वाङ्मय' नियमित प्राप्त। प्रकाशन-सूचनाओं से अवगत हो रहा हूँ। बिहार के प्रतिष्ठित रचनाकार-अनुवादक स्व० हंसकुमार तिवारी की 'कला' पुस्तक का प्रकाशन-समाचार पाकर हर्ष हुआ। आपका काम दिन-ब-दिन और फैले। धन्यवाद।
—शंकर मोहन झा, देवघर

स्मृति-शेष

स्मरण

शीर्षस्थ जन कवि **त्रिलोचन शास्त्री** की पहली बरसी (9 दिसम्बर) पर दिल्ली में एक लघु गोष्ठी में आलोचक नामवर सिंह ने अपने निर्माण में उनके योगदान को याद किया। विद्वान राधावल्लभ त्रिपाठी ने त्रिलोचन के सागर प्रवास के दिनों के संस्मरण सुनाए, एक स्मारिका का भी विमोचन हुआ। नामवर सिंह ने कहा कि इस साल त्रिलोचन की ग्रन्थावली आनी चाहिए।

प्रसिद्ध हिन्दी सेवी तारानाथ बनगुंडेजी नहीं रहे

प्रसिद्ध हिन्दी सेवी **श्री तारानाथ बनगुंडे जी** के निधन की सूचना सुनकर उनके मित्रों, साथियों और हिन्दी परिवार को बहुत ही आघात पहुँचा।

वे अध्यापन और पढ़ते समय भी हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद से गहन रूप में जुड़े हुए थे और वह हिन्दी की रात्रि पाठशाला में अपना अमूल्य समय देकर पढ़ाया करते थे, इस तरह हिन्दी के प्रचार-प्रसार में कई वर्षों तक अपना समय देते रहे। इतना ही नहीं वे जेलों में जाकर कैदियों को हिन्दी का महत्त्व समझाते थे।

संगोष्ठी/लोकार्पण

व्यास महोत्सव

ब्रह्म विद्या की भूमि काशी में समग्र भारतीय विद्याओं को समेकित करते हुए विगत तीन वर्षों से 'व्यास महोत्सव' का आरम्भ किया गया है। महर्षि व्यास का काशी से सम्बन्ध रहा है अत: उन्हें समर्पित इस महोत्सव के माध्यम से राष्ट्रीय स्तर पर वेद-विद्या, काव्येतिहास, पुराण, उपनिषद्, दर्शन आदि विषयों के पुनर्पाठ एवं व्याख्या हेतु विद्वानों को एकत्र करने का यह सराहनीय प्रयत्न है। उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान द्वारा आयोजित इस पंच दिवसीय महोत्सव का औपचारिक उद्घाटन करते हुए प्रदेश के संस्कृति मंत्री सुभाष पाण्डेय ने कहा, विश्व में शांति तभी सम्भव होगी जब हम 'महाभारत' व 'गीता' जैसे ऐतिहासिक ग्रन्थ को पढ़ें व इसमें निहित ज्ञान के मूल तत्त्व को समझें। मानव जीवन में सत्य पर आधारित ऐसे दुर्लभ ग्रन्थों को पढ़ने के बाद कहने-सुनने को कुछ शेष नहीं रह जाता।

उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान की अध्यक्ष डॉ० (श्रीमती) रेखा वाजपेयी ने कहा कि महर्षि व्यास ने 18 पुराणों व अनेक उपनिषदों की विस्तार से व्याख्या की है। महर्षि व्यास का साहित्य ही भारतीय संस्कृति का मेरुदंड है। राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० युगल किशोर मिश्र ने कहा कि वेद पुराण आज भी प्रासंगिक हैं। इसमें निहित सत्य को मनुष्य जीवन में उतारे। इसके लिए जन-जन को इससे जोड़ना होगा। प्रो० कमलेश दत्त त्रिपाठी ने कहा कि भारतीय संस्कृति को सीमाओं के बाहर ले जाने का काम महर्षि व्यास ने किया। संस्कृत वि०वि० के कुलपति प्रो० वी० कुटुम्ब शास्त्री ने स्वागत भाषण में महर्षि व्यास की कृतियों पर प्रकाश डाला।

अध्यक्षीय सम्बोधन में राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान (उज्जैन) के उपाध्यक्ष श्रीनिवास रथ ने कहा कि वेद की परम्पराएँ लुप्त हो रही हैं। अच्छा-बुरा समझने की परख वेद-पुराण से ही होती है। इसके अध्ययन के लिए युवा पीढ़ी को प्रेरित करना होगा तभी यह प्राचीन विद्या संरक्षित होगी।

इसके बाद वेद पाठ व वेद व्याख्या पद्धति का सत्र भी चला। इस दौरान यह बातें खुलकर सामने आईं कि वेद की हजारों विधाएँ लुप्त हो चुकी हैं। जरूरत है इन विधाओं को आत्मसात करने व इनके संवर्धन की। इसके लिए सार्थक प्रयास होना चाहिए।

चर्चा में कहा गया कि महर्षि पातंजलि के समय ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्ववेद की कुल 1131 शाखाएँ विद्यमान थीं। इस बात का उल्लेख महर्षि ने अपने ग्रन्थ में भी किया है लेकिन वर्तमान में मात्र सात शाखाएँ ही बची हैं जबकि शेष लुप्त हो गई हैं।

तत्पश्चात् वेद व्याख्या पद्धति पर संगोष्ठी हुई। इसमें प्राचीनकाल से लेकर करपात्री स्वामी तक की वेद भाष्य पद्धति पर विभिन्न विद्वानों ने प्रकाश डाला। साथ ही पाश्चात्य वेदार्थ विचारकों की ओर से वेदान्तशीलन पर विस्तार से चर्चा हुई। अध्यक्षता राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० युगल किशोर मिश्र ने की।

विचारसत्र में 'सृष्टि विद्या और पौराणिक दृष्टि के धर्मशास्त्रीय सन्दर्भ' विषय-सत्र की अध्यक्षता करते हुए विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन के हिन्दी विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो० राममूर्ति त्रिपाठी ने कहा कि भारतीय सृष्टि विज्ञान के उद्भव में सूर्य व अर्द्धनारीश्वर का योगदान महत्त्वपूर्ण है। इनसे ही जगत की सृष्टि हुई है। सूर्य की हजारों रश्मियों से जड़जीव उत्पन्न हुए। वहीं, अर्द्धनारीश्वर से मानव की रचना हुई।

विशिष्ट अतिथि कालीदास अकादमी, उज्जैन के पूर्व निदेशक प्रो० कमलेश दत्त त्रिपाठी ने संगोष्ठी के दौरान आए विचारों का विवेचन किया।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के पुराणेतिहास विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो० रमाशंकर त्रिपाठी ने कहा कि पुराण की भाषा सामान्य लोकभाषा के परे है। यद्यपि इसमें आमजन के लिए ही संदेश दिए गए हैं लेकिन इसकी भाषा समाधि भाषा है। इसलिए पुराणों का शास्त्रीय अध्ययन कर इसमें निहित गूढ़ अर्थ का प्रकाशन होना चाहिए। गुजरात वि०वि० में संस्कृत के पूर्व आचार्य व भाषा विभाग के निदेशक प्रो० बसंत कुमार एम भट्ट ने 'श्रीमद् भागवत पुराण में वैदिक देवता सृष्टि का तिरोधान' विषय पर विचार व्यक्त किए। संस्कृत वि०वि० के प्रो० गंगाधर पंडा ने पुराणों का परिचय देते हुए पौराणिक सृष्टि विद्या पर प्रकाश डाला। साथ ही सांख्य और वेदांत दर्शन की दृष्टि से सृष्टि प्रक्रिया का विस्तार से विवेचन किया।

इस सारस्वत एवं सांस्कृतिक यज्ञ के समापन सत्र के मुख्य अतिथि राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली के कुलपति प्रो० राधावल्लभ त्रिपाठी ने कहा कि महाभारत के सम्बन्ध में लोगों के मन में घर कर गई कलह व विवाद से जुड़ी धारणा को बदलना होगा। इस ग्रन्थ में जीवन को जीने की समग्र दृष्टि है तो मानव धर्म के साथ ही इसमें चिंतन, शास्त्र, कला व वास्तु का समग्र सार भरा है। विश्व के साहित्य में ऐसा कोई महाकाव्य नहीं है। गीता व रामायण मानव का हृदय है तो महाभारत उसका मस्तिष्क है। रामायण और गीता का प्रवचन तो हो रहा है लेकिन महाभारत पाठ की परम्परा टूट गई है। यह फिर से घर-घर में शुरू होनी चाहिए।

अध्यक्षीय सम्बोधन में सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति प्रो० रामजी मालवीय ने कहा कि महर्षि व्यास के जीवन की कृतियों से लोगों को परिचित कराने के लिए शासन स्तर पर प्रतियोगिताएँ होनी चाहिए। ताकि युवा पीढ़ी उनके ज्ञान-विज्ञान को समझ सके।

सिर्फ चर्चा से नहीं होगा संस्कृत का भला

संस्कृत का भला सिर्फ चर्चा-परिचर्चा से नहीं होने वाला है। इसमें निहित आध्यात्मिक व वैज्ञानिक तथ्यों को वैश्विक परिवेश में रोजगार से जोड़कर देखना होगा। व्यास महोत्सव के तहत संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी में जुटे संस्कृतविदों ने कहा कि संस्कृत को माँ की तरह आदर देना होगा। जन-जन को जोड़ने के लिए सभी को मिलकर पहल करनी होगी।

अध्ययन के लिए छात्र ही नहीं मिल रहे हैं

राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान (उज्जैन) के उपाध्यक्ष संस्कृत के प्रख्यात विद्वान श्रीनिवास रथ ने कहा कि संस्कृत पढ़ने के लिए छात्र नहीं मिल रहे हैं। संस्कृत को रोजगारपरक बनाने की जरूरत है। इसके लिए हमें वैज्ञानिक सोच रखनी होगी। बदले परिवेश में व्यवसायिक व आधुनिक शिक्षा पर बच्चे बल दे रहे हैं। वहीं, हम संस्कृत व परम्परा के नाम पर ढोंग कर रहे हैं जो इसके प्रचार-प्रसार में बाधक हैं।

रोजगारपरक हो कोर्स

राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० युगल किशोर मिश्र का कहना है संस्कृत का विकास तभी सम्भव है जब इसके पाठ्यक्रम को रोजगारपरक बनाया जाएगा। साथ ही स्कूलों में संस्कृत की शिक्षा अनिवार्य कर दी जाय। इसके लिए मात्र चर्चा नहीं अपितु सार्थक प्रयास होने चाहिए।

जागरूकता से ही मिलेगा बल

उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान की अध्यक्ष डॉ० (श्रीमती) रेखा वाजपेयी का कहना था कि संस्कृत भाषा को शिखर तक ले जाने के लिए लोगों में जागरूकता लानी होगी। सरकार, संस्कृतविद्, अभिभावक, मीडिया को इसमें सार्थक पहल करनी होगी। सरकार को चाहिए कि अंग्रेजी स्कूलों में हाईस्कूल तक संस्कृत की अनिवार्य पढ़ाई हो।

इच्छाशक्ति का अभाव

उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान के निदेशक व प्रमुख सचिव (भाषा) अशोक घोष ने संस्कृत के अब तक जन-जन की भाषा न बन पाने के पीछे सरकारी तंत्र में इच्छाशक्ति का अभाव बताया। कहा कि एक वर्ग इसे ब्राह्मण की भाषा मानता है इससे हमें निकलना होगा। साथ ही मातृभाषा हिन्दी की तरह देवभाषा संस्कृत के लिए सभी को जोड़ना होगा।

कालिदास - समारोह 2008 (साहित्य) उज्जयिनी

विगत दिनों आयोजित इस समारोह का उद्घाटन अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के विद्वान् पं० रामकरण शर्मा और समापन विकलाङ्ग विश्वविद्यालय के स्वयम्भू कुलाधिपति स्वामी रामभद्र ने सम्पन्न किया। अन्तराल में सारस्वत और सांस्कृतिक आयोजन चलते रहे। इन कार्यक्रमों के साथ पं० सूर्यनारायण व्यास लोकप्रिय व्याख्यानमाला का संकल्प भी कार्यान्वित होता रहा। इसके सम्पूर्ण विषय 'भारत-भारती' पुरस्कार सम्मानित राममूर्ति त्रिपाठी ने निर्धारित किए थे।

''शृंगार की अन्वर्थता और कुमार संभव''

पं० रेवाप्रसाद द्विवेदी ने पं० कमलेशदत्त त्रिपाठी की अध्यक्षता में उपरोक्त विषय में अपना संतुलित और वैदुष्यपूर्ण पक्ष रखा। डॉ० कमलेशदत्त त्रिपाठी की अध्यक्षीय वक्तव्य भी विचारोत्तेजक रहा—पर 'कुमार सम्भव' के अष्टम सर्ग को सबने अनछुआ रहने दिया। समापन सत्र में डॉ० राममूर्ति त्रिपाठी से भी उनका पक्ष रखने का अनुरोध किया गया। उन्होंने कहा—कालिदास के साहित्य में शृंगार के दो पक्ष हैं—अधोरेतस्क का शृंगार और ऊर्ध्व रेतस्क का शृंगार। प्रथम प्रकार के अन्तर्गत भी दो उपप्रकार हैं—संयत शृंगार और असंयत शृंगार। असंयत शृंगार यक्ष का है जिस पर दण्डित हुआ था। निर्विवाद संयत शृंगार ऋतुपर्ण को छोड़कर समस्त रघुवंशियों का है— कहा गया है।

'यौवने विषयैषिणाम् तथा प्रजायै गृहमेधिनाम्'

तीनों रूपकों में अभिज्ञान शाकुन्तल का शृंगार अभिशप्त है पर इनका नायिकारब्ध शृंगार अपने ढंग का राग और सौंदर्य के कवि कालिदास का शृंगार है—

कुमार सम्भव के अष्टम सर्ग का शृंगार ऊर्ध्वस्रोतस्क संयमियों में अग्रगण्य शिवपार्वती का शृंगार है। आनन्दवर्धन इसमें ग्राम्यत्व देखते हैं और शक्ति संवृत होने से आस्वादगोचर मानते हैं। पण्डितराज इसी स्तर के 'गीतगोविन्द' के शृंगार को मत्तमतगंज की तरह आलानभंजन-मर्यादाभंजन मानते हैं। आनन्दवर्द्धन ने भी इसमें ग्राम्यत्व दोष देखा है और माना है कि यह अव्युत्पत्तिकृत दोष उनकी शक्ति से ढँक गया है।

''अव्युत्पत्तिकृतो दोषः शक्त्या संव्रियते कवि''

पण्डितों के बीच यह विवादास्पद रहा है। समापन सूत्र के प्रमुख अतिथि तथाकथित वीतराग स्वामी रामभद्र ने सार्वजनिक मंच से स्पष्ट घोषणा की कि उन्हें शृंगार की अन्वर्थता से कुछ नहीं लेना देना है। आचार्यों ने कहा भी है कि कवि यदि शृंगारी है तो पथरीला संसार रसमय हो जाता है और वीतराग है तो उसके लिए सब नीरस है—

शृंगारी चेत् कविः काव्ये सर्व रसमयं जगत्।
स एव वीतरागाचेत् नीरसं सर्वमेवतत्॥

काव्यशास्त्र या नाट्यशास्त्र में काव्य और नाट्य में 'शान्त' का स्थान सर्वोपरि है— पर उनके लिए जो इसे मानते हैं— अन्यथा उसके उच्चावच भाव का सवाल ही नहीं उठता। पर अध्यात्म के क्षेत्र का भक्तिशास्त्र विशेषकर गौड़ीय आचार्यों का शास्त्र विपरीत कहता है। वह कहता है—शांत भक्ति भक्ति की एक स्फुरण अवस्था मात्र है। किञ्चित् विकसित होते ही उस पर दास्य भाव का रंग चढ़ जाता है अद्वैत से द्वैत की तरंग इसी भाव से उठती है और सदा बनी रहती है। गौड़ीय वैष्णव प्रभृति सम्प्रदायों में सख्य, वात्सल्य और माधुर्य भाव भी माने गए हैं तथापि सभी भावों में दास्य भाव अनुस्यूत रहता है।

कालिदास के साहित्य से स्पष्ट है कि वे शैव हैं और उनकी भक्ति शैवी है—

आत्मानमात्मना वेत्सि, सृजस्यात्मानमात्मना

'कुमार संभव' की पंक्तियाँ शैवी दृष्टि को ही व्यक्त करती हैं। इसीलिए वे शिव को स्थिर भक्तियोग से सुलभ मानते हैं। शैवी अद्वयवाद में न तो शुष्क ज्ञानमार्ग है न ज्ञानहीन भक्तिमार्ग। यह मूल में दास्य, पर फल में माधुर्य को मानता है। कान्ताभाव या माधुर्यभाव से सभी अधोवर्ती भाव समाए हुए हैं—इसीलिए वहाँ शृंगार की अन्वर्थता स्पष्ट है। शृंगार शृंग को छूता है—शृंग को प्राप्त करता है। परात्पर सत्ता रमण के लिए ही पुरुष एवं स्त्री रूप में विभक्त हुई—और दोनों अर्धांग हुए— मिलन में ही पूर्णता का अनुभव करते हैं और पूर्णता की अनुभूति ही आनन्द है—रमण का यही लक्ष्य है। शृंगार शुद्ध भी है और मलिन भी। शुद्ध में अप्राकृत काम और सौंदर्य होता है—मलिन में प्राकृत काम और सौंदर्य। कालिदास के आराध्य में शुद्ध शृंगार ही मानना पड़ेगा। शिवपार्वती ने पूर्णता बोधपूर्वक रमण के लिए तपस्या की थी, साथ ही अर्धाङ्गता भी। पूर्णता का बोध ही आनन्द है।

पूर्णता परामर्शमयतां दयात् आनन्द इत्युच्यते
—अभिनव गुप्त

उसे सुन-पढ़कर जिसे वेदना हो, स्वयम् को जो आहत महसूस करे वह असत् पात्र है— वह अपनी छाया वहाँ देखता है—इसीलिए गौड़ीय आचार्यों ने उज्ज्वल रस के प्रसंग में कहा है—

गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं प्रयत्नतः

साथ ही यह भी कि

''क्रिया सर्वापि सैवात्र परं कामो न विद्यते''

यहाँ वे सारी क्रियाएँ होती हैं—केवल मूल में प्राकृत काम नहीं होता। और अन्त में—

तस्मै नमः स्वादुपराङ्मुखाय

स्वाद से विमुख अपात्र एवं तथाकथित वीतराग को शत-शत नमन है। मैं उसे किसी अशिष्ट संज्ञा (गर्दभ) से संबोधित नहीं कर सकता। मेरे भीतर अहंकार समेधित तथाकथित विद्वत्ता नहीं है। **—राममूर्ति त्रिपाठी,** उज्जैन

पंत-शैलेश के बहाने साहित्यिक विमर्श

पिछले दिनों महादेवी वर्मा सृजन पीठ, कुमाऊँ विश्वविद्यालय द्वारा संस्कृति विभाग, उत्तराखण्ड शासन के सहयोग से पंत की जन्मस्थली कौसानी में 'पंत-शैलेश स्मृति' शीर्षक से विमर्श और कविता-पाठ का एक वृहद् कार्यक्रम आयोजित किया गया।

हिन्दी आज एक ओर अपने अस्तित्व के अनेकमुखी संकटों से गुजर रही है तो दूसरी ओर उसकी लोकभाषाएँ उससे भी गम्भीर संकट की शिकार हैं। साहित्य तो दूर, बोलचाल की भाषा में तक लोकभाषाओं का प्रयोग गायब होता जा रहा है। अपनी जड़ों की भाषा की इसी स्थिति पर विचार करते हुए लगा कि अपने कवियों-लेखकों के साथ समाज का सीधा संवाद स्थापित करके ही शायद कुछ बात बन सकती है। समाज का सबसे संवेदनशील क्षेत्र होने के कारण साहित्य ही आखिरी आदमी की खबर लेता है। इसलिए तेजी से बदलते हुए अपने इस दौर में हम अपनी पूर्ववर्ती दो पीढ़ियों के युगप्रवर्तक रचनाकारों-सुमित्रानंदन पंत और शैलेश मटियानी का स्मरण करते हुए दिशा पा सकते हैं।

सम्मेलन का उद्घाटन उत्तराखण्ड के राज्यपाल श्री बी०एल० जोशी ने किया। उन्होंने कवि सुमित्रानंदन पंत तथा कथाकार शैलेश मटियानी का भावपूर्ण स्मरण करते हुए कहा कि उत्तराखण्ड की धरती के ये दोनों रचनाकार अपनी-अपनी विधा के महारथी रहे। पंत साहित्य में उन्होंने अरविन्द दर्शन के प्रभाव को रेखांकित किया तो दूसरी ओर मटियानी साहित्य में उत्तराखण्ड के आम आदमी के संघर्ष की पीड़ा को।

महादेवी वर्मा सृजन पीठ के निदेशक प्रो० बटरोही ने संगोष्ठी के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हिन्दीतर भारतीय भाषाओं में उत्तराखण्ड तथा हिन्दी भाषा व साहित्य की स्थिति का पता लगाने के लिए इस त्रि-दिवसीय संगोष्ठी में आठ भाषाओं—तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम, मराठी, गुजराती, बांग्ला तथा ओड़िया के विशेषज्ञों को आमंत्रित किया गया।

वरिष्ठ कवि लीलाधर जगूड़ी ने अपने आधार व्याख्यान 'उत्तराखण्ड के रचनाकारों के संघर्ष और सौन्दर्य की दुनिया' में हिन्दी एवं उसकी लोकभाषाओं में सृजनरत रचनाकारों के सामने आने वाली चुनौतियों एवं संघर्षों का विस्तार से जिक्र किया।

संगोष्ठी के प्रथम सत्र का विषय था 'हिन्दीतर प्रान्तों में हिन्दी साहित्य और उत्तराखण्ड'। इस सत्र की अध्यक्षता उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद की पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो० पी० माणिक्याम्बा ने की। कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड़ की हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो० सुमंगला एस० मुम्मिगट्टी ने

कर्नाटक में हिन्दी साहित्य एवं उत्तराखण्ड के रचनाकारों का विस्तार से परिचय दिया। मद्रास विश्वविद्यालय, चेन्नई के प्रो० एम० शेषन ने तमिलनाडु में हिन्दी शिक्षण तथा हिन्दी साहित्य की स्थिति पर आलेख प्रस्तुत किया। पुरी (उड़ीसा) से आयी हुई ओड़िया की प्रसिद्ध कवयित्री शैलबाला महापात्र ने उड़ीसा में हिन्दी साहित्य की स्थिति को रेखांकित किया और बताया कि आधुनिक ओड़िया साहित्य में भी लगभग उसी प्रकार के काव्य आन्दोलन मिलते हैं जैसे कि हिन्दी साहित्य में। गुजरात विश्वविद्यालय, अहमदाबाद की हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो० रंजना अरगड़े ने विस्तार से गुजरात में हिन्दी साहित्य के विभिन्न रचना आन्दोलनों एवं शोध कार्यों का उल्लेख किया। शैलेश की बेटी शुभा मटियानी ने अपने बाबूजी के अनेक अंतरंग संस्मरणों तथा कवि महेन्द्र मटियानी ने एक भाई के रूप में शैलेश की आत्मीयता को याद किया।

यू०पी० कॉलेज में 'बदलती दुनिया का सच और हमारा साहित्य' विषय पर परिचर्चा

वाराणसी। मध्य प्रदेश प्रगतिशील लेखक संघ के प्रान्तीय पदाधिकारी और प्रसिद्ध कवि ओम भारती ने कहा कि पूँजीवाद के इस बेहद जटिल समय में हमें मनुष्य और समाज को उसके उपभोक्तावादी सम्बन्धों में अब देखना पड़ रहा है। समाज में निरन्तर हो रहे बदलाव को आज लगभग सभी रचनाओं में रेखांकित किया जा रहा है लेकिन इन कृतियों के प्रति पाठकों की रुचि दिखाई नहीं पड़ती। जरूरत है इस बदलाव से जुड़कर आगे की सोच रखने व आत्मसात करने की।

श्री भारती सोमवार को प्रगतिशील लेखक संघ की वाराणसी इकाई की ओर से उदय प्रताप महाविद्यालय पुस्तकालय सभागार में 'बदलती दुनिया का सच और हमारा साहित्य' विषयक परिचर्चा को बतौर मुख्य अतिथि सम्बोधित कर रहे थे। अध्यक्षीय सम्बोधन में साहित्यकार प्रो० चौथीराम यादव ने कहा कि स्त्री विमर्श और दलित विमर्श उत्तरशती के सबसे महत्त्वपूर्ण विमर्श हैं। इसे खंडित विमर्श कहकर टाला नहीं जा सकता है। कवि व आलोचक डॉ० श्रीप्रकाश शुक्ल ने कहा कि बाजार की व्यवस्था ने समाज को अपदस्थ कर दिया है। प्रो० शाहिना रिजवी ने कहा कि समाज से जुड़ने का मकसद होना चाहिए। बी०एच०यू० हिन्दी विभाग के रीडर डॉ० राजकुमार ने कहा कि रचना की सामाजिक प्रभावशीलता क्यों घट रही है, इस पर विचार किया जाना चाहिए। मूलचंद सोनकर ने कहा कि भारतीय साहित्य में दलित जीवन व लेखन की उपेक्षा कर पाना अब मुश्किल है। डॉ० राम सुधार सिंह ने कहा कि इधर की रचनाओं में आम आदमी तो आया है लेकिन उसकी वास्तविक पीड़ा को प्रमाणिक अभिव्यक्ति नहीं मिली है। कवि शिव कुमार पराग ने कहा कि लेखन के स्तर पर ईमानदार होने का संकल्प लेने की जरूरत है। स्वागत डॉ० गोरखनाथ, संचालन संजय श्रीवास्तव व धन्यवाद ज्ञापन जवाहर लाल कौल ने किया।

डिगबोई में 'असम में हिन्दी पत्रकारिता' पर संगोष्ठी

डिगबोई महिला महाविद्यालय के हिन्दी विभाग द्वारा 'असम में हिन्दी पत्रकारिता : स्वरूप एवं सम्भावनाएँ' विषय पर एक संगोष्ठी आयोजित की गयी जिसके संयोजक विभागाध्यक्ष डॉ० हरेराम पाठक थे। डॉ० राजरूप सिंह की अध्यक्षता में सम्पन्न उक्त संगोष्ठी में श्री हरिसिंह तोमर, श्री बी०एन० पाण्डेय, डॉ० ए०एन० सहाय एवं डॉ० मृणाली कुँअर ने अपने-अपने विचार अभिव्यक्त किए एवं असम में हिन्दी पत्रकारिता के समक्ष खड़ी चुनौतियों से अवगत कराया।

'गाँवों का बूढ़ा बरगद' का लोकार्पण

छत्तीसगढ़ के गालिब समझे जाने वाले मशहूर शायर सलीम अहमद जख्मी 'बालोदवी' की ग़ज़लों का संग्रह **गाँवों का बूढ़ा बरगद** का लोकार्पण उन्हीं की कर्मभूमि बालोद में एक गरिमामय समारोह में किया गया। इस अवसर पर जख्मी 'बालोदवी' के पुत्र जनाब अलीम अहमद हन्फी, पूर्व विधायक लोकेंद्र यादव, बालोद नगर पालिका अध्यक्ष राकेश यादव, छ०ग० श्रमजीवी पत्रकार संघ के अध्यक्ष सी०के० त्रिवेदी आदि उपस्थित थे।

छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, रायपुर और इसके संचालक रमेश नैयर के सौजन्य से प्रकाशित इस संग्रह की भूमिका प्रसिद्ध शायर निदा फाजली ने लिखी है।

'सम्राट् चंद्रगुप्त' का लोकार्पण

नई दिल्ली के इंडिया इंटरनेशनल एनेक्सी के सभागार में अखिल भारतीय हिन्दी समिति (न्यूयॉर्क), देवायतन तथा अक्षरम् के संयुक्त तत्त्वावधान में प्रवासी लेखक डॉ० विजय कुमार मेहता की पुस्तक 'सम्राट् चंद्रगुप्त' (प्रबन्धकाव्य) तथा 'मगध साम्राज्य, चाणक्य, चंद्रगुप्त एक ऐतिहासिक विश्लेषण' (शोध ग्रन्थ) का लोकार्पण भारतीय सांस्कृतिक सम्बद्ध परिषद् के अध्यक्ष डॉ० कर्ण सिंह ने किया। पुस्तक चर्चा के साथ-साथ वक्ताओं ने इतिहास विमर्श तथा काव्य-विधा पर भी चर्चा की।

त्रिदिवसीय सर्व भारतीय भाषा सम्मेलन

विगत दिनों मुंबई (प्रभादेवी) के रवीन्द्र नाट्य मन्दिर में महाराष्ट्र राज्य हिन्दी साहित्य अकादमी द्वारा एक त्रिदिवसीय सर्व भारतीय भाषा सम्मेलन का भव्य आयोजन हुआ। महाराष्ट्र शासन सांस्कृतिक विभाग के तत्त्वावधान में सभी भारतीय भाषाओं को एक मंच पर लाने की यह अभूतपूर्व पहल थी।

विभिन्न गोष्ठियों के विषय भारतीय भाषाओं के विविध पक्षों पर आधारित थे, जैसे, संविधान और भारतीय भाषाएँ, भारतीय भाषाओं के बीच पारस्परिक सम्बन्ध, भारतीय भाषाओं में आदान-प्रदान, अनुवाद, सूचना प्रौद्योगिकी का प्रयोगात्मक स्वरूप आदि, समसामयिक साहित्य का मूल्यांकन, हिन्दीतर राज्यों में हिन्दी की स्थिति, हिन्दी भाषी राज्यों में भारतीय भाषाएँ, भूमंडलीकरण का भारतीय भाषाओं की स्थिति पर प्रभाव, भारतीय भाषाओं के विकास में सांस्कृतिक संसाधनों की भूमिका आदि। विदेशों में भारतीय भाषाओं पर विदेश से समागत विद्वानों ने एक वृहत् परिदृश्यात्मक विवेचन का आयाम तय किया था जिससे अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में देश की भााषाओं की दशा और दिशा निरूपित करने में पर्याप्त सहूलियत मिली।

प्रथम सत्र में डोगरी भाषा की विदुषी डॉ० पद्मा सचदेव ने अध्यक्षता की एवं विद्वान आलोचकों में बंगला के डॉ० इन्द्रनाथ चौधरी, गुजराती के श्री सीतांशु यशश्चन्द्र, संस्थाली की श्रीमती निर्मला पुतुल, मराठी के श्री हरिश्चन्द्र थोरात, कन्नड़ के डॉ० वी०वै० ललितम्बा, भोजपुरी के श्री अरुणेश नीरन आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। प्रोफेसर मिर्जा खलील अहमद बेग की अध्यक्षता में आयोजित गोष्ठी में डॉ० इन्दिरा गोस्वामी (असमी) डॉ० रामदेव शुक्ल (भोजपुरी) डॉ० अर्जुन शतपथी (ओड़िआ) डॉ० स्वर्णप्रभा चैनारी (बोड़ो) श्री ठाकुर चावला (सिंधी) आदि विद्वानों ने भाषाओं के पारस्परिक सम्बन्ध पर महत्त्वपूर्ण विचार व्यक्त किये।

हिन्दीतर राज्यों में हिन्दी की स्थिति पर डॉ० विजय राघव रेड्डी, डॉ० अरविन्दाक्षम (मलयालम), डॉ० बाल शौरि रेड्डी (तमिल), डॉ० भूपेन्द्र राय चौधरी (असमी), डॉ० चन्द्रलेखा डिसौजा (कोंकणी), श्रीमती मनोहर युम यमुना देवी (मणिपुरी) ने अपने विचार प्रस्तुत किए। व्यापक सन्दर्भों में, डॉ० गंगाप्रसाद विमल, डॉ० कृष्णकुमार शर्मा, डॉ० नामवर सिंह आदि ने हिन्दीभाषी क्षेत्रों में भाषा-संकट पर विद्वतापूर्ण परिदृश्यात्मक आकलन किया।

डॉ० रमेश कुंतल 'मेघ' ने साम्प्रतिक दौर में भाषाई स्थिति के अंतराल में राष्ट्रीय विचार को ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत कर आदान प्रदान पर जोर दिया। श्रीमती विभारानी ने मैथिली का महत्त्व, रघुवीर चौधरी ने गुजरात में हिन्दी और डॉ० अर्जुन शतपथी ने ओड़िशा में आदान प्रदान पर सिलसिलेवार तथ्य प्रस्तुत किये। 'दिनमान' के पूर्व विद्वान सम्पादक डॉ० कन्हैया लाल नन्दन ने अन्तर्राष्ट्रीयता और हिन्दी की भूमिका पर विशद विवेचन प्रस्तुत किया।

'बालमन' का लोकार्पण

शाख़ों से टूट जाएँ वो पत्ते नहीं हैं हम।
ये आँधियों से कह दो औक़ात में रहें॥

यही जज्बा था उन बाल रचनाकारों का जिनकी पत्रिका 'बालमन' का विमोचन किया डॉ० गोपाल दास 'नीरज', डॉ० नमिता सिंह, डॉ० वेदराम वेदार्थी, श्री ज्ञानेन्द्र साज, डॉ० गोपाल बाबू शर्मा ने।

इस अवसर पर पद्मभूषण डॉ० गोपाल दास 'नीरज' ने कहा कि बच्चों के द्वारा बच्चों के लिए यह देश की पहली पत्रिका है। इन बच्चों ने बाल साहित्य को मरने से बचा लिया। बाल रचनाकारों की पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं को पढ़कर लगता है कि इन रचनाकारों के भीतर हिन्दुस्तान की पीड़ा छुपी है।

व्यंग्य-संग्रह 'कामरेड का नगाड़ा' लोकार्पित

हिन्दी साहित्य के चर्चित व्यंग्य-कथा लेखक एवं नाटककार श्रीकान्त व्यास के व्यंग्य-संग्रह 'कामरेड का नगाड़ा' का बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् के सभागार में लोकार्पण हुआ। पुस्तक का लोकार्पण पूर्व गृहसचिव व साहित्यकार जियालाल आर्य के द्वारा हुआ। मुख्य अतिथि सुविख्यात समालोचक डॉ० रामवचन राय ने श्रीकान्त व्यास की पुस्तक में व्यंग्य की मारक क्षमता को बताया।

प्रगतिशील लेखक संघ की गोष्ठी

मध्यप्रदेश प्रगतिशील लेखक संघ इकाई-सतना के द्वारा श्री हरिशंकर परसाई के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता डॉ० आत्माराम तिवारी ने की। गोष्ठी में प्रमुख रूप से वक्ताओं के द्वारा इस आशय के विचार व्यक्त किये गये कि हरिशंकर परसाई गद्यकार के रूप में प्रेमचंद के उत्तराधिकारी के रूप में माने जाते हैं। परसाई के साहित्य के सम्बन्ध में यह कहा जाता है कि स्वतन्त्रता के पहले का भारत देखना हो तो प्रेमचंद का साहित्य पढ़ा जाता चाहिए और स्वतन्त्रता के बाद के भारत के लिए परसाई का साहित्य पढ़ना चाहिए।

तकनीकी शब्द निर्माण एवं वैज्ञानिक लेखन पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी सम्पन्न

विगत दिनों वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली तथा हिन्दी विभाग कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भिलाईनगर, छत्तीसगढ़ के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित 'मानविकी समाज विज्ञान विषयों में तकनीकी शब्द निर्माण एवं वैज्ञानिक लेखन' विषय पर तीन दिवसीय संगोष्ठी सम्पन्न हुई।

पाँच सत्रों में चली इस राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन मुख्य अतिथि श्री रमेश नैय्यर और श्री भरतलाल की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग के सहायक निदेशक श्री उमाकान्त खुबालकर ने संगोष्ठी के आयोजन और उद्देश्य पर प्रकाश डाला। प्रथम सत्र में भाषाविज्ञान विभाग, पं० रविशंकर शुक्ल वि०वि०, रायपुर के डॉ० चित्तरंजन कर ने 'पारिभाषिक शब्द निर्माण में भाषा विज्ञान की भूमिका', वाणिज्य संकाय, कल्याण महाविद्यालय, भिलाई के डॉ० आर०पी० अग्रवाल ने 'वाणिज्य की तकनीकी शब्दावली' पर विद्वततापूर्ण व्याख्यान दिये। भोजनावकाश के उपरान्त 'अर्थशास्त्र की पारिभाषिक शब्दावली' पर डॉ० बी०सी० सिन्हा, रीवा ने भूगोल की तकनीकी शब्दावली' पर प्रो० एच०एस० गुप्ता, रायपुर ने अपने शोधपूर्ण विचार रखे। इस प्रथम दिन के सत्र में 'धर्म दर्शनशास्त्र की तकनीकी शब्दावली' और 'मनोविज्ञान की पारिभाषिक शब्दावली' पर भी चर्चा हुई।

दूसरे सत्र में 'पारिभाषिक शब्द निर्माण और विज्ञान लेखन', 'इतिहास पुरातत्त्व की तकनीकी शब्दावली', पाठ्य पुस्तकों में प्रयुक्त तकनीकी शब्दावली एवं हिन्दी की मानकवर्तनी पर कई विद्वानों ने अपने विचार रखें।

तृतीय सत्र में डॉ० सुधीर शर्मा, सहायक प्राध्यापक कल्याण महाविद्यालय, भिलाई ने 'पत्रकारिता में प्रयुक्त तकनीकी शब्दावली' पर शोध पत्र प्रस्तुत किया।

चतुर्थ सत्र खुला अकादमिक सत्र था। इस सत्र में स्थानीय और बाहर से आये हुए प्रतिभागियों ने संगोष्ठी पर अपनी प्रतिक्रिया दी। इस खुले सत्र में महाराष्ट्र से पधारे प्रो० सोनवणे राजेन्द्र 'अक्षत' ने अपने वक्तव्य में आयोग द्वारा तैयार किये साढ़े आठ लाख शब्द तुरन्त आयोग की वेबसाईट पर लाँच करने की माँग करते हुए ऐसी राष्ट्रीय संगोष्ठी का सुचारु रूप से आयोजन संयोजन करने के लिये आयोग और कल्याण महाविद्यालय, भिलाई को धन्यवाद दिया और वैज्ञानिक तकनीकी शब्दावली आयोग को 'मीडिया' पर पारिभाषिक शब्द निर्माण करने का निवेदन किया।

'यह मेरा सच' का लोकार्पण

हिन्दी के जाने माने उपन्यासकार अजय मिश्र के पहले कविता संग्रह 'यह मेरा सच' का लोकार्पण रविवार को साहित्यकार ज्ञानेन्द्रपति ने किया। कवि जितेन्द्रनाथ मिश्र के संचालन में हुए इस समारोह में हिन्दी के अनेक साहित्यकार उपस्थित थे। इस अवसर पर वक्ता रामाज्ञा राय ने कविता संग्रह पर प्रकाश डाला तो कवि ज्ञानेन्द्रपति ने बनारस पर आधारित श्री मिश्र की इस कविता संग्रह की सराहना की।

'भारत में जल प्रबंधन' का लोकार्पण

वाराणसी। नगर के एक बुजुर्ग अखबारनवीस जगनारायण और चित्रकार मधु ज्योत्स्ना की लिखी किताब 'भारत में जल प्रबंधन' का लोकार्पण करने को पिछले दिनों जल पुरुष राजेंद्र सिंह और समाज विज्ञानी प्रभात पटनायक समेत कई लोग मौजूद थे। इसे आम आदमी की आम आदमी के लिए लिखी गई किताब बताया गया।

पुस्तक लोकार्पण

मुंबई। हिन्दुस्तानी प्रचार सभा द्वारा प्रकाशित पुस्तकों 'उत्कृष्ट साहित्य की पहचान' (सम्पादक : डॉ० सुशीला गुप्ता) व 'अच्छे अदब की पहचान' (सम्पादक : श्री मुहम्मद हुसैन परकार) के लोकार्पण समारोह की अध्यक्षता करते हुए सभा के ट्रस्टी व मानद सचिव श्री सुभाष सम्पत ने कहा कि बच्चों को अच्छे संस्कार देने के लिए हमें बाल साहित्य को प्रोत्साहन देना चाहिए। प्रसन्नता की बात है सभा ने पूर्व प्रकाशित 'बच्चों की कहानियाँ' (40 पुस्तिकाएँ) पुनर्प्रकाशित करने का बीड़ा उठाया है।

म०गां०अ० हिन्दी विश्वविद्यालय के कुलपति श्री विभूतिनारायण का अभिनन्दन

महात्मा गाँधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के तीसरे कुलपति के रूप में श्री विभूतिनारायण राय की नियुक्ति के उपरान्त राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा की ओर से नागरिक अभिनन्दन समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर श्री विभूतिनारायण राय जी ने कहा—''गाँधीजी द्वारा स्थापित राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा और गाँधी के नाम पर स्थापित महात्मा गाँधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय का प्रगाढ़ सम्बन्ध है। समिति के प्रयासों से ही नागपुर में ऐतिहासिक विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन हुआ। महात्मा गाँधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय विश्व हिन्दी सम्मेलन के प्रस्तावों के फलस्वरूप ही मूर्त्त रूप ले सका है। वर्धा का महत्त्वपूर्ण संस्थान विश्वविद्यालय भी है। यह विश्वविद्यालय शैशवावस्था में है। पर कुछ ही दिनों में यह बड़े वटवृक्ष में परिवर्तित होते दिखेगा। यहाँ कई नए पाठ्यक्रम खुलनेवाले हैं। यह विश्वविद्यालय सिर्फ शैक्षणिक संस्थान के रूप में ही नहीं अपितु गाँधीजी के विचारों को मूर्त रूप देने में अमूल्य भूमिका निभाएगा।

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के प्रधानमंत्री प्रो० अनन्तराम त्रिपाठी ने अपने उद्बोधन में समिति की स्थापना के ऐतिहासिक पहलू से रू-ब-रू कराते हुए कहा कि गाँधीजी चाहते थे कि हिन्दी साहित्य ही नहीं हिन्दी भाषा का प्रचार-प्रसार सारे देश में हो। आज देश की एकता की वाहिनी के रूप में हिन्दी आगे बढ़ रही है। देर-सबेर हिन्दी संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषा का दर्जा पा लेगी। हमें आशा है कि प्रख्यात साहित्यकार व कुशल प्रशासक कुलपति श्री विभूति नारायण राय विश्वविद्यालय को शिखर तक ले जाएँगे।

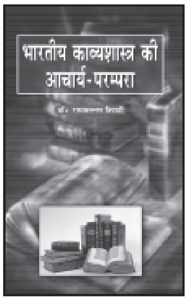

भारतीय काव्यशास्त्र की आचार्य परम्परा

डॉ० राधावल्लभ त्रिपाठी

प्रथम संस्करण : 2007 ई०

पृष्ठ : 164

सजिल्द : रु० 180.00

ISBN: 978-81-7124-568-0

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

परम्परा के साथ

आजादी से पहले के दशकों में, जिसे हम चाहें तो तिलक और गाँधी युग कहें, रामचन्द्र शुक्ल जैसे युगांतरकारी साहित्य चिंतकों ने अपना यह दु:ख क्षोभपूर्ण भाषा में प्रकट किया कि ''एक जगह की प्रचलित और सामान्य वस्तुओं को दूसरी जगह विकृत रूप में रख कर नवीनता की विज्ञप्ति करना किसी सभ्य जाति को शोभा नहीं देता।'' आगे के उनके शब्द हैं—''यह नवीनता नहीं है—अपने स्वरूप का घोर अज्ञान है, अपनी शक्ति का घोर अविश्वास है, अपनी बुद्धि और उद्‌भावना का घोर आलस्य है, पराक्रांत हृदय का घोर नैराश्य है, कहाँ तक कहें ? घोर साहित्यिक गुलामी है।''

आचार्य शुक्ल की इन चिंताओं के सन्दर्भ में जब हम राधावल्लभ त्रिपाठी जैसे संस्कृतज्ञों और हिन्दी सेवियों के सुकर्म देखते हैं तो सुखद अनुभूति होती है कि आधुनिक भारतीय बौद्धिकों का छोटा-सा ही सही, एक समूह जरूर है जो इस दिशा में गहरी जिम्मेदारी के साथ काम कर रहा है। **भारतीय काव्यशास्त्र की आचार्य परम्परा** पुस्तक राधावल्लभ त्रिपाठी की इसी जिम्मेदारी का निर्वाह है।

पुस्तक की भूमिका में त्रिपाठीजी लिखते हैं, ''भारतीय कला चिंतन का इतिहास लगभग पाँच सहस्र वर्षों की अवधि में विस्तृत है। इस अवधि में सैकड़ों श्रेष्ठ आचार्यों को मोटे तौर पर दो श्रेणियों में रखा जा सकता है—प्रस्थान प्रवर्तक और प्रस्थानानुयायी। प्रस्तुत पुस्तक प्रस्थान प्रवर्तक आचार्यों पर केन्द्रित है।''

प्रस्थान प्रवर्तक आचार्यों को गिनाते हुए लिखते हैं—''ऐतरेय महीदास, भरत, भामह, दंडी, वामन, आनंद वर्धन, कुंतक, राजशेखर, अभिनव गुप्त, भोज और पंडितराज जगन्नाथ, ये आचार्य निश्चित रूप से लक्षणों या काव्य-विषय कोटियों के विचार में ऐसा कुछ जोड़ते हैं जो चिंतन के सारे परिदृश्य को बदल देता है। ये आचार्य भारतीय काव्यशास्त्र की विभिन्न चिंतन सरणियों का प्रतिनिधित्व करते हैं और अपने-अपने प्रस्थान में अपनी विशिष्ट परम्परा भी रचते हैं।'' राधावल्लभ त्रिपाठी का यह कथन निर्णायक जैसा है कि ये ग्यारह आचार्य परम्परा को उसकी समग्रता में समझने के लिए आधार भी बनाते हैं। और यह आधार बगैर उस सांस्कृतिक और दार्शनिक पृष्ठभूमि के नहीं बनता, जिसकी अनुपस्थिति में इनकी सही पहचान ही असम्भव न सही तो मुश्किल जरूर हो उठेगी।

उन्नीसवीं शताब्दी का पुनरुत्थान युग हो या नवजागरण काल, इनकी महत्ता इस बात में है कि इस काल के मनीषियों, संस्कृतिविदों और साहित्यिक बौद्धिकों ने विलुप्त से हो उठे भारत को पुनराविष्कृत करने का संकल्प लिया और अभियान चलाया। भक्ति आन्दोलन के बाद 1857 के पहले और बाद के यशस्वी मनीषियों ने इसमें जो भूमिका निभाई है, इस प्रकार के प्रयास उसको समझने में हमारी मदद करते हैं।

शुरुआती पृष्ठों पर ही हमें ऐसे असाधारण वाक्य पढ़ने को मिलते हैं—''परमात्मा आत्मविस्तृति या अपनी लीला के विस्तार के लिए जगत रूपी शिल्प को रचता है, तो मनुष्य आत्म-संस्कृति के लिए मानुष शिल्प रचता है।'' डॉ० त्रिपाठी आगे टिप्पणी करते हैं, ''ऐतरेय महीदास पहले भारतीय विचारक हैं, जिन्होंने कला या शिल्प की अवधारणा से जोड़ कर संस्कृति की अवधारणा प्रस्तुत की है।'' इस विचार का विस्तार करते हुए वे ऐतरेय ब्राह्मण के आधार पर हमें यह सूचित करते हैं कि ''यहाँ छंदस या काव्य को भी शिल्प कहा गया है। इस तरह कविता कवयिता और भावक दोनों का संस्कार करती है।'' उनके अनुसार जिस तरह वैदिक ऋषि समस्त सृष्टि को परमात्मा के काव्य रूप में अनुभव करता है, उसी तरह ऐतरेय समस्त सृष्टि को शिल्प के रूप में देखते हैं। काल की गति में शिल्प है, नृत्य में लय और गति है इसलिए नृत्य भी शिल्प है। शिल्प की यह व्यापक अवधारणा और जगत का परमात्मा के शिल्प के रूप में दर्शन इस परम्परा में आगे की सहस्राब्दियों में अव्याहत बना हुआ है।

पुस्तक में तुलनात्मक दृष्टि भी बराबर जारी है। ऐतरेय महीदास द्वारा प्रयुक्त 'अनुकृति' शब्द के सन्दर्भ में लेखक का ध्यान पश्चिमी कला चिंतकों की ओर भी जाता है और वे इस दृष्टि-भेद को सस्पष्ट करने की पहल करते हैं—अनुकरण की जो अवधारणा प्लेटो में थी उसमें कला या काव्य को गर्हित दृष्टि से देखा गया। अरस्तू में यह अनुकृति कविगत सर्जनात्मक व्यापार है, जबकि भारतीय चेतन में यह आत्म-संस्कार बोधक। डॉ० त्रिपाठी कहते हैं कि हमारे समय में मार्क्स एक सर्वथा भिन्न परिप्रेक्ष्य में ही सही, प्रकारान्तर से ऐतरेय की बात दोहराते हैं। वे कहते हैं कि कारीगर या शिल्पी अपने औजारों से रचना करता हुआ दुनिया को भी बदलता है और उसके साथ अपने आपको भी। यह एक ऐसी उदार बौद्धिक दृष्टि है, जो प्राय: उन पश्चिमी कला-मनीषियों और कलाविदों में नहीं मिलती, जिनके अपने कर्म ही विश्व में एकमात्र सुकर्म लगते हैं।

संस्कृति या भारतीय काव्यशास्त्र से परिचित होने के लिए अब तक जिन अकादमिक पुस्तकों के पास हम आते-जाते रहे हैं उनमें ज्ञान की यत्किंचित रूपरेखा तो हमें मिलती है, पर वह किस ऐतिहासिक क्रम और किस असाधारण दृष्टि की विरल कमाई है, इसका बोध बहुत कम हो पाता है, खासतौर से हिन्दी में। विपरीत इसके यहाँ एक ऐतिहासिक अनुक्रमिकता और विकासधारा है, जिसकी बेहद जरूरत थी। लेखक ने यथासम्भव पहली बार आचार्यों के व्यक्तिगत जीवन के सम्बन्ध में भी कुछ महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ दी हैं जैसे कि 'काव्यालंकार' के प्रणेता भामह और 'अभिनवभारती' के रचयिता अभिनवगुप्त के बारे में। दिलचस्प यह कि लेखक इन आचार्यों का परिचय देते हुए प्रचलित औपचारिक शैलियों का अनुसरण नहीं करता, बल्कि अपनी सृजनशील शैली से उनके परिचय को सम्मोहक बना देता है।

समूची पुस्तक गम्भीर वैचारिक विमर्श और सृजनशीलता का भरोसा दिलाती हुई काव्यतत्त्वचिंतन के कुछ ऐसे आधारभूत रहस्यों को सुस्पष्ट करती है जिनको लेकर महत्त्वपूर्ण शोध किए जा सकते हैं। उदाहरण के लिए प्रतिभा भाव, भाविक काव्यपाक और अलंकार आदि। इसी तरह आनन्दवर्धन के हवाले से वे हमें संकेत भी देते हैं कि कविता कोई सिद्ध वस्तु नहीं है। उसे नए सिरे से तोड़ा, जोड़ा या लगाया जा सकता है। वह एक सम्भावना भी है। यह बहुत कुछ उन सहृदयों पर निर्भर करता है, जिन्हें काव्यशास्त्र में रसिक कहा गया है। आनन्दवर्धन के हवाले से ही वे हमें यह संदेश देते हैं कि रस हर कला के अनुभव में नए सिरे से जन्म लेता है। यह भी कि यह प्रक्रिया आखिरकार सहृदय की चेतना पर विश्रांत होती है। सारी कला भी चित्तवृत्ति स्वरूप होती है। दोनों की एकाकारिता या तादात्म्य ही तो रस या आनन्द है।

काव्यशास्त्र चर्चा को शुष्क विमर्श मानने वाले लोग इसे पढ़ते हुए बार-बार यह अनुभव कर सकेंगे भारत की पांडित्य परम्परा भी अविदग्ध नहीं रही है। पांडित्य और वैदग्ध्य कोई विरोधी तत्त्व अगर होते तो हिन्दी कविता में आचार्य कवियों की परम्परा ही कहाँ से जन्म ले पाती।

भारतीय काव्यशास्त्र कितना गहन, गम्भीर और सूक्ष्म है, उसके आचार्यों की उद्‌भावनाएँ कितनी मौलिक रही हैं, स्वयं उनका जीवन और व्यक्तित्व कितना साधनाशील और परम्परा संवादी रहा है। इसे यह पुस्तक निरन्तर प्रकट करती है।

आज जबकि हिन्दी समीक्षा का क्षेत्र आधुनिक, उत्तर आधुनिक विमर्शों से गरुआ कर हांफ रहा है, राधावल्लभ त्रिपाठी की यह पुस्तक उसे देशी हवाओं का संस्पर्श करा कर उन्हें किंचित सुस्थिर और सहज करेगी, ऐसा मेरा विश्वास है। **—विजयबहादुर सिंह**

प्राप्त पुस्तकें और पत्रिकाएँ

अक्षर पर्व (नवम्बर 2008) : सम्पादक : सर्वमित्रा सुरजन, देशबंधु प्रकाशन विभाग, रायपुर-492001, छत्तीसगढ़

लोक गंगा (दिसम्बर 2008) : सम्पादक : योगेशचन्द्र बहुगुणा, स्ट्रीट-6 सी/1 शास्त्रीनगर, हरिद्वार रोड, देहरादून-248002

साहित्य-अमृत (दिसम्बर 2008) : सम्पादक : त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी, 4/19 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002

साक्षात्कार (अगस्त-सितम्बर 2008) : सम्पादक : हरि भटनागर, साहित्य अकादमी, मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद, संस्कृति भवन, बाणगंगा, भोपाल-3

संकल्परथ (अक्टूबर-नवम्बर 2008) : सम्पादक : राम अधीर, 108/1, शिवाजी नगर, भोपाल

वार्तावाहक (नवम्बर 2008) : सम्पादक : डॉ० व्रजसुंदर पाढ़ी, हिन्दी शिक्षा समिति, ओड़िशा, शंकरपुर, अरुणोदय मार्केट, कटक-753012

मैसूर हिन्दी प्रचार परिषद् पत्रिका (नवम्बर 2008) : सम्पादक : डॉ० बि० राम संजीवय्या मैसूर हिन्दी प्रचार परिषद्, 58, वेस्ट-ऑफ-कोर्ट रोड, राजाजी नगर बेंगलूर-560010

भारतवाणी (नवम्बर 2008) : सम्पादक : डॉ० चंदूलाल दूबे, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, धारवाड़-580001

पुष्पक (अक्टूबर 2008) : सम्पादक : डॉ० रमा द्विवेदी, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, कादम्बिनी क्लब, हैदराबाद, 93/सी, राजसदन, वेंगलरावनगर, हैदराबाद-500038

संकल्प (जुलाई-सितम्बर 2008) : प्रधान सम्पादक : प्रो० टी० मोहन सिंह, हिन्दी अकादमी, हैदराबाद, प्लॉट नं० 10, रोड नं० 6, समतापुरी कालोनी, न्यू लागोल के पास, हैदराबाद-500035

वर्तमान साहित्य (दिसम्बर 2008) : सम्पादक : कुँवरपाल सिंह, नमिता सिंह, 28, एमआईजी, अवन्तिका-1, रामघाट रोड, अलीगढ़-202001

विवरण पत्रिका (नवम्बर 2008) : सम्पादक : धोण्डीराव जाधव, हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद नामपल्ली-1

नव-निकष (नवम्बर 2008) : सम्पादक : डॉ० लक्ष्मीकांत पाण्डेय, ज्ञानोदय प्रकाशन, 6-7 जी, मानसरोवर काम्प्लेक्स, पी० रोड, कानपुर

सूर सौरभ (अक्टूबर-नवम्बर-दिसम्बर 2008) : डॉ० एन० सुन्दरम्, प्लाट नं० 10, बालाजीनगर, चेन्नै-600092

छोटा कद

—आशा दीदी शैली

परिचय एक विवाह समारोह में हुआ। लड़का भारतीय स्टेट बैंक में कार्यरत है। पिता साधारण स्कूली मास्टर हैं। लड़की भी बी०ए० पास है, उसकी बैंक में नौकरी लग गयी है।

लड़के वाले सदलबल घर आ धमके। माता-पिता ने यथासाध्य आवभगत की। उन्होंने घर-बार देखा, दहेज राशि का अनुमान लगाया, चार दिन मेहमान बने रहे। वापस लौट कर पत्र लिखा कि ''बातों से पता चला कि लड़की का कद छोटा है।''

इधर बैंक में नौकरी करती हुई लड़की भी बैंक की परीक्षाएँ पास करते हुए मैनेजर के पद पर पहुँच गयी। एक दिन शाम ऑफिस से जब वह घर लौटी तो घर में प्रवेश करते ही चौंक उठी। पूर्व प्रस्तावित उसी लड़के (वर) के पिता, जिन्हें उसका कद छोटा लगा था, वे घर में मौजूद थे। उन्हें देखकर वह बोली—''आपको बड़ी जल्दी याद आयी मेरी? वह भी, जब मैं बैंक में मैनेजर बन गयी। आप जानते हैं कि आपका बेटा केवल एकाउण्टेंट है?''

फिर अपने पिता को सम्बोधित करते हुए बोली ''पिताजी, अब इनके बेटे का कद मुझसे छोटा हो गया है।''

(नैणसी, 5 मई 2008)

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 10 **जनवरी 2009** **अंक : 1**

संस्थापक एवं पूर्व प्रधान संपादक

स्व० पुरुषोत्तमदास मोदी

संपादक : **परागकुमार मोदी**

वार्षिक शुल्क : रु० 50.00

अनुरागकुमार मोदी
द्वारा
विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
के लिए प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०
वाराणसी *द्वारा मुद्रित*

डाक रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2003
RNI No. UPHIN/2000/10104
प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत
Licenced to post without prepayment at
G.P.O. Varanasi
Licence No. LWP-VSI-01/2001

सेवा में,

☎ : Offi.: (0542) 2413741, 2413082, 2421472, (Resi.) 2436349, 2436498, 2311423 ● Fax: (0542) 2413082
E-mail : sales@vvpbooks.com ● Website : **www.vvpbooks.com**

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

विश्वविद्यालय प्रकाशन

प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)

विशालाक्षी भवन, पो०बॉक्स 1149
चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN

Premier Publisher & Bookseller

(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIANS)

Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149
Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)